श्री महावीराय नमः

जय गुरु महेन्द्र श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष-2, अंक-47 30 सितम्बर, 2021 जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक पृष्ठ-40 मूल्य 5/- प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

संघ में गुणों का महत्त्व

संघ के प्रत्येक सदस्य में कोई-न-कोई गुण जरूर मिलेगा। गुण-अवगुण सबमें मिलते हैं। किसी में मान लिजिए 100 अवगुण हैं तो भी उसमें कोई गुण जरूर होगा। गुण-ग्रहण करने वाला गुण देखेगा और गुण अपनाने का प्रयास करेगा। आपने वासुदेव श्रीकृष्ण का जीवन-वृत्त सुना है। उन्होंने मरी हुई कुतिया देखी। साथ चलने वालों ने भी क्षत-विक्षत, बदबूदार कुतिया का कलेवर देखकर नाक-मुँह बंद करके आगे चलना ठीक समझा, परन्तु गुणग्राही श्रीकृष्ण ने कहा- ''देखो! इस कुतिया के दाँत कितने सुन्दर हैं? वासुदेव श्रीकृष्ण का कथन हमें गुण-ग्रहण करने की प्रेरणा दे रहा है। संघ में ऐसा कोई नहीं, जिसमें कोई-न-कोई गुण नहीं हो। हर एक में गुण है। हाँ, किसी में कम, तो किसी में ज्यादा गुण हो सकते हैं, किन्तु बिना गुण वाला शायद ही कोई हो। अगर हम संघ में गुण और गुणी बढ़ाना चाहते हैं, तो जिसमें जो योग्यता है, उसे बढ़ावा दें।

-'हीरा-प्रवचन-पीयूष' भाग-5 से साभार

आदरणीय रत्नबन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 6 एवं व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 पीपाड़ शहर में सुख शांति पूर्वक विराजमान है। साथ ही रत्नसंघीय संत-सती मण्डल सभी चातुर्मास स्थलों पर सुख-शाता पूर्वक विराजित है।

परम पूज्य आचार्य भगवन्त के कृपाप्रसाद से सभी जगह चातुर्मास तप-त्याग, उमंग-उल्लास के साथ निरन्तर गतिमान है। पर्युषण पर्व के अवसर पर परम पूज्य आचार्य भगवन्त, मुनिमण्डल एवं पूज्या महासतीवृन्द के पावन सान्निध्य में सभी स्थानों पर तप-त्याग एवं धर्माराधन का अनूठा ठाट रहा है।

महापर्व पर्युषण आत्मावलोकन, आत्म-आलोचन एवं विगत वर्ष में हुई भूलों के परिमार्जन का मंगलमय अवसर है। अतः हम सर्वप्रथम पूज्य आचार्य भगवन्त, संत मण्डल एवं पूज्या महासतीवृन्द के चरणों में नतमस्तक हो विगत वर्ष में हमसे हुई मन, वचन, काया से जाने-अनजाने में हुई भूल, त्रुटि अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना करते है। हम स्वयं अपने जीवन में एवं संघ- सेवा में रही कमियों के लिये अन्तःकरण से क्षमाप्रार्थी है। महापुरूषों की प्रेरणाओं को जीवन में साकार कर अपने जीवन को समुज्जवल बना सके, यही मंगल कामना करते हैं।

विगत तीन वर्षो में विशेषतः इस वर्ष में हम अपने द्वारा एवं सभी साथी पदाधिकारियों, कार्यकर्त्तागण तथा संघ संदस्यों द्वारा कर्तव्य, क्रियाकलाप निष्पादन एवं सम्पादन में रही कमियों एवं संघ कार्यालय द्वारा लिखने, बोलने, सम्पर्क एवं समन्वय करने में हुई त्रुटियों से संघ-सदस्यों की भावनाओं को ठेस पहुँची हो उसके लिये आप सबसे अन्तःकरण से करबद्ध क्षमायाचना करते हैं।

महापर्व पर्युषण के पुनीत अवसर पर हमसे जाने-अनजाने हुई त्रुटियों/भूलों के लिये कृपया स्नेहिल हृदय से क्षमा कर अनुगृहीत करें। आपका सद्भावी स्नेहिल-सरल एवं पावन पथ प्रदर्शन संघ को पूर्ववत मिलता रहेगा, इसी शुभ भावना के साथ....

-: क्षमाप्रार्थी :-

प्रकाश टाटिया — अध्यक्ष
धनपत सेठिया — महामंत्री
अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

मंजू भंडारी — अध्यक्ष
अलका दुधेड़िया — महासचिव
अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

मनीष मेहता — अध्यक्ष
अमित हीरावत — महासचिव
अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद्

भावी आचार्य की घोषणा पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने संवत्सरी के पावन प्रसंग पर दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को उद्‌बोधन दिया। जिसका संकलन पीपाड़ शहर के संघ-मंत्री श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने किया है।-सम्पादक

पंच परमेष्ठि भगवान को भावपूर्वक वन्दन-नमन। निगोद से लेकर निरंजन बनने का मार्ग तीर्थंकर भगवान ने क्षमा व सहनशीलता को बताया है। आज हम संज्ञी है, किस कारण से? जब हम एकेन्द्रिय में थे- न बोलते थे, न सुनते थे, न सोचते थे तो एकेन्द्रिय से बेइन्द्रिय में कैसे आये? तीर्थंकर प्रभु ने कहा मात्र सहन करके, उस अवस्था में हमें उबाला गया, काटा गया, छीला गया, पीसा गया, किस-किस योनि में कितने-कितने कष्ट इस जीव ने सहन किए, वर्णन नहीं कर सकते। अनन्तकाल सहने के बाद बेइन्द्रिय में आये, वहाँ पर भी वो ही हालत, पराधीनता, भाषा भी समझ में नहीं आवे, वहाँ पर सहन करते रहे व निरंजन बनने तक सहन करते रहेंगे। ऐसा क्यों कह रहा हूँ? एक ने भगवान से पूछा- कब तक सहन करें। भगवान ने कहा कि जब तक सिद्ध नहीं बन जाते तब तक सहन करें। पंचेन्द्रिय, मानव, समकिती, श्रावक, साधु ही नहीं, केवली बन जाने के बाद भी कष्ट आ सकता है। आगम बोलता है 14 वें गुणस्थान तक भी असाता का उदय रहता है। अतः सिद्ध बनने तक सहन करना है। तीर्थंकर के इतने अतिशय होने के बाद भी प्रभु महावीर को लोहीठान की बीमारी हो गई, कारण गौशालक ने तेजोलेश्या छोड़ी, रोष करें तो............ । एक वचन याद रखना है, जो भी दुःख आते हैं कर्मों के उदय से आते हैं। जीव के द्वारा ही नहीं अजीव से भी कष्ट आ सकते हैं- कांटा चुभ जावे तो कष्ट होगा या नहीं? चलते-चलते पत्थर से ठोकर लगी, फ्रेक्चर हो गया, क्या कांटों से या पत्थर से लड़ोगे- जान लेंगे कि गलती मेरी थी, वरना तो इसी रास्ते से सैकड़ों निकल गये वो भी ठोकर लगने से नहीं गिरे; मैं ही क्यों गिरा- यह संवत्सरी पर्व प्रेरणा कर रहा, किसी भी हालत में सहन करना, हिन्दी की बारहखड़ी में अक्षर आते स श ष ह अर्थात् सह। मात्र ऊँचा उठने का कारण एक ही है- सहन करना। इसी सहनशीलता की गाथा आचार्य पट्टावली के माध्यम से आपके सामने रखी जा रही है- सोमिल ने गजसुकुमाल को पहले कब देखा? सिर पर खीरे (अंगारे) रखे, परन्तु मन में भी रोष नहीं, क्या दोष है मेरा, क्या गुनाह किया मैंने, क्यों रखे- ये सोचते तो केवल ज्ञान नहीं होता। एक ही शब्द आज इस क्षमापर्व पर कि सहन करके ही निगोद से निरंजन बना जा सकता है।

इस मार्ग पर चलने वाला पट्टावली में गाया जाता है। जो पट्टावली आपके सामने आ रही है, वो भी सहन करने वालों की है- सहन करने वालों के क्रम में, मैं चतुर्विध संघ के सामने कह रहा हूँ कि **रत्नसंघ का भविष्य में संचालन (भावी**

आचार्य) महेन्द्र मुनिजी करेंगे। यह चतुर्विध संघ को आज संवत्सरी महापर्व पर सूचना कर रहा हूँ। किसलिए कर रहा हूँ- यह जगह (आचार्य पद) माला पहनने की नहीं, यह प्रशंसा के गीत सुनने की नहीं। यह सहन करने की जगह है, घर का बड़ा आदमी सहन नहीं करेगा तो घर नहीं चल पायेगा। एक भोला है, एक कमजोर है, एक होशियार है, एक मंदबुद्धि है, आदि-आदि..........। माँ-बाप सबको लेकर नहीं चले, सहन करना छोड़ दे तो घर भी नहीं चलेगा। ऐसे ही समाज भी नहीं चलेगा। संघ भी नहीं चलेगा। सहनशक्ति बढ़ाने हेतु सूचना कर रहा हूँ-''**रत्नसंघ का भविष्य में संचालन (भावी आचार्य) महेन्द्रमुनिजी करेंगे– संभालेंगे**'' सूचित रहे।

भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परमश्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा व्यक्त उद्‌गार–

पूज्य गुरुदेव के उद्‌बोधित, उद्‌घोषित वचनों को श्रवण कर, भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने भाव विह्वल अवस्था में कृतज्ञ होकर फरमाया- कि पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती ने मुझे संयम प्रदान कर, संसार का भार कम किया था और आपश्री ने मुझ कमजोर हृदय वाले पर इस गौरवशाली संघ का भार वहन करने का उत्तरदायित्व दिया है। यह आपकी अनन्त अनन्त कृपा है। आपके जयवन्त शासन में आप जो भी आज्ञा, आदेश, निर्देश देंगे, उसकी पालना करने में, मैं कटिबद्ध रहूँगा। संघ का संरक्षण, संवर्द्धन आपश्री के निर्देशन में होता रहे और मैं आपकी आज्ञा की आराधना करता रहूँ। आपकी कृपादृष्टि का वर्षण सदैव की भांति होता रहे।

भावी आचार्य के गुण वर्णन, बधाई एवं क्षमापना सभा

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. द्वारा 12 सितम्बर, 2021 को रत्नसंघ के भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के गुण-वर्णन एवं क्षमापना के शुभ प्रसंग पर फरमाये गये उद्‌गार का संकलन पीपाड़ शहर के संघ मंत्री श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने किया है।-सम्पादक

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के उद्‌गारः–

''**णमो आयरियाणं**''

आचार्य भगवन्तों को नमस्कार करने के पश्चात्।

परमार्थ के प्रकाश से प्रकाशित होता है गुरुदेव जीवन आपका।
पर पदार्थ के प्रभाव से मुक्त है गुरुदेव मनन आपका।।
चिन्मयता की चांदनी में चलकर, चमकता रहे गुरुदेव चिन्तन आपका।
गुण-गौरव की गरिमा से गुंजित है गुरुदेव गणिपद आपका।।

अभिनन्दन एवं अभिनन्दन की इन पावन क्षणिकाओं में अध्यात्मयोगी, आगम अध्येता, पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन पादारविन्दों में अपनी भावनाओं के अक्षत अर्पित करने का सौभाग्य उपलब्ध होने पर मानस तरंगायित हो सहसा इस सत्य को स्वीकार कर रहा है कि गुरुदेव आप महान् हैं। आपका निर्णय महान् है। गुरुदेव! आपने जिस कुशलता, दक्षता व शालीनता से निर्णय फरमाया है वो हमारी सोच से परे था, हर समय सेवा में रहने वाले छोटे संतों को भी आभास तक नहीं था। इस प्रकार के निर्णय से यह भी निश्चित हो गया कि जिनशासन में रत्नसंघ कितना महान् है। हमने तो आज तक इतिहास में आंखों से पढ़ा है। कानों से श्रवण किया है कि पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. एवं पूज्य श्री दुर्गादासजी म.सा. की पद के प्रति कितनी निस्पृहता थी कि 24 वर्ष के लम्बे अन्तराल तक दोनों पूज्य एक-दूसरे को आचार्य मानते रहे, आचार्य कहते रहे, परन्तु गुरुदेव ने तो उस स्वर्णिम इतिहास में और चार चांद लगा दिये हैं। स्वयं आचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहते हुए पद के प्रति निर्लेपता निर्मोहिता, निसंगता का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने श्रीमुख से भावी व्यवस्था का निर्णय फरमाया। यह निर्णय संघ के लिए हर्ष का विषय है तो गुरुदेव के गणिपद की गौरव-गरिमा को जिनशासन के गगन में गुंजायमान करने वाला प्रसंग है। भाग्यशाली रहे हैं वे लोग जिन्होंने कल का नजारा अपनी स्वयं की आँखों से देखा। भाग्यशाली रहे हैं वे लोग जिन्होंने गुरुदेव को अपने श्रीमुख से अपने संघ की बागडोर को संभालने की घोषणा करते सुना।

श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. जिनका मेरे जीवन पर अगणित उपकार है। अनन्त उपकार है। आपके माध्यम से ही मैंने गुरुदेव को पाया है। गुरुदेव जिनका जीवन विशाल है, अनुकम्पा विशाल है, कृपा विशाल है और संघ की सारणा, वारणा, धारणा और विचारणा विशाल है। ऐसे गुरुदेव को पाने में मेरी पहली सीढ़ी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ही रहे हैं। मैं इस प्रसंग पर यह कहना चाहता हूँ- ''श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. से कि आपके साथ सचेतन अतीत है गुरु हस्ती का शासनकाल। आपने देखा है आपके साथ प्रभावी वर्तमान है गुरु हीरा ने अपने पुण्य प्रभाव और अतिशय तप-जप के तेज के साथ संघर्षों की श्रृंखला में भी शासन की दीप्ति को दिग् दिगन्त में फैलाया है और आपके साथ है उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ जो आपके उज्ज्वल उन्नत उर्ध्वमुखी शासन की गति-प्रगति में सहायक सिद्ध होगी। हम सभी आपके साथ हैं। पूज्य गुरुदेव! आपके हृदय में गुरुदेव विराजे हुए हैं तो आप गुरुदेव के हृदय में हमेशा-हमेशा के लिए विराजमान हो गये हैं। गुरुदेव के कल के (संवत्सरी) निर्णय से यह बात सत्य सिद्ध हो गई- वो शिष्य भाग्यशाली होता है जिस शिष्य के दिल में गुरु विराजते हैं मगर उससे भी बढ़कर वो शिष्य परम सौभाग्यशाली होता है, जिस गुरु के दिल में शिष्य स्थान पाता है। आपने सेवा और समर्पणशीलता से गुरुदेव के हृदय में स्थान पाया है। इसलिए गुरुदेव आपके हृदय में, आपके भीतर

हमेशा-हमेशा रहेंगे।

आपके आचार्य रूपी शरीर के मुख बनेंगे- श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.। वे मधुरव्याख्यानी हैं। उन्हें बोलना अच्छे से आता है, उन्हें तोड़ निकालना अच्छे से आता है तो जोड़ना भी अच्छे से आता है। यह सोच रहे होंगे तोड़ निकालना कैसे? तो संघ में समाज में आई हुई समस्या का तोड़ निकालना अच्छे से आता है तो साथ ही संघ में संस्कारों से, सद्गुणों से जोड़ना उन्हें बखुबी आता है। अर्थात् इस दृष्टि से उनमें दोनों कलाएँ मौजूद हैं। आप भी उनकी ये दोनों कला का उपयोग कर विकृतियों को विदाकर संस्कृति को सदा-सदा के लिए जीवन्त एवं प्राणवन्त बनायेंगे।

आपके आचार्य रूपी शरीर के नाक हैं- श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.। मैंने पिछले कुछ सालों में उनकी सेवा में रहते हुए बहुत नजदीक से देखा है कि श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. की घ्राणेन्द्रिय तेज है एवं वे नासिका की तरह संघ की शोभा को बढ़ाने वाले सेवाभावी संत हैं।

आपके आचार्यरूपी शरीर के मस्तक हैं- श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.। जिनका दिमाग कम्प्यूटर की तरह चलता है, उनकी यादें उनकी बातें जबरदस्त हैं। उनकी शक्ति का, उनकी सोच का आप उपयोग शासन प्रभावना में बहुत अच्छे से कर पायेंगे। (इसी प्रकार मुनिश्री ने अपने प्रवचन में विभिन्न संतों एवं साध्वियों को भुजा, नयन, कान, हाथ, पेट, अंगुली के रूप में सहयोगी बताया।)

अंत में आपने फरमाया- आपके दो चरण बनेंगे इस संघ के सभी श्रावक और श्राविकाएँ, जो आपके एक आदेश, एक निर्देश, एक संदेश, एक संकेत पर अपने हजारों-लाखों कदमों को बढ़ाकर संघ की आभा को बढ़ाने वाले बनेंगे।

आप सोच रहे होंगे- म.सा. ने खुद को अलग रखा, पर मैंने अलग नहीं रखा, मैं बनूँगा आपके चरणों की धूल। जैसे आपश्री ने पूज्य गुरुदेव की तन-मन से अहर्निश सेवा की, शायद उसकी शतांश भी न कर सकूँ। पर मैं आपके साथ आपकी परछाई बनकर प्रतिक्षण-प्रतिपल सेवा कर अपने आपको धन्य बना सकूँ। इसी शुभ भावना के साथ..।

श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के उद्गारः—

पंच परमेष्ठि भगवान को भावपूर्वक वन्दन नमन।

धर्मानुरागी सज्जनों! वीर प्रभु के जयवन्त शासन में पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. ने इस महान् रत्नसंघ की नींव रखी थी। उन्हीं की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए आचार्यश्री गुमानचन्द्रजी म.सा. ने इस संघ के मान और गौरव को अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ाया। आचार्य श्री रतनचन्द्रजी म.सा. ने रत्नत्रय की अभिवृद्धि हेतु क्रियोद्धार कर, रत्नसंघ की गौरव गरिमा का वर्धन किया था। आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. ने संघ में उत्कृष्ट भक्ति का उदाहरण प्रस्तुत कर अपना जीवन गुरु सेवा में अग्लान भाव से समर्पित कर दिया। इसके बाद आचार्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. ने प्रवचन प्रभावना के माध्यम से जनरंजन ही नहीं, भवी जीवों के कुमति का निकंदन भी किया,

फिर आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. जो इस संघ में ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करने वाले महान् आचार्य हुए। इसी क्रम में जीवन-निर्माण के शिल्पकार आचार्यश्री शोभाचन्द्रजी म.सा. ने सेवा का आदर्श रख संघ की शोभा को बढ़ाया। इतिहास के निर्माता और रचयिता आचार्य श्री हस्ती ने इस संघ पर महान् उपकार किये तथा शासन की प्रभावना करते हुए गुरु हीरा के रूप में अनमोल रत्न प्रदान किया, जो पिछले 30 वर्ष से शासन की निरन्तर अभिवृद्धि कर रहे हैं। इसी क्रम में कल हमने देखा कि संघ की उन्नति, अभिवृद्धि तथा सुरक्षा हेतु सहनशीलता की प्रेरणा के साथ पूज्य गुरुदेव ने भविष्य का निर्णय फरमाते हुए पूज्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के सक्षम हाथों में संघ को सौंपा है। एक बात ध्यान रखना, जहाँ हमारी सोच समाप्त होती है- वहाँ पर गुरुदेव की सोच प्रारम्भ होती है। किसी को कल्पना भी नहीं थी कि ऐसा अभूतपूर्व निर्णय गुरुदेव संवत्सरी के दिन फरमायेंगे। पूज्य गुरुदेव दूरदृष्टा हैं, हमारी दृष्टि बाहरी है- गुरुदेव की दृष्टि अन्तर्तल तक पहुँचने वाली है। गुरुदेव ने रहस्य को जानकर सोच समझकर संघ हित में निर्णय फरमाया है। आज भले ही सबको विस्मय हुआ हो, पर जब भविष्य देखेंगे- तब हम कहेंगे कि गुरुदेव की सोच कितनी महान् थी। इस परम्परा में सभी आचार्य 60 वर्ष की वय के पहले पहले बने हैं, परन्तु वय तेजस्विता में बाधक नहीं होती है- नीति कहती है- ''**तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते**''।

गुरु हस्ती की उम्र मात्र साढ़े पन्द्रह वर्ष थी, संघ में बड़ी वय वाले सन्तरत्न थे, पर गुरु शोभा ने योग्यता देख विश्वास के साथ गुरु हस्ती का आचार्य पद हेतु मनोनयन किया, जो भविष्य में महान् आचार्य हुए। गुरु शोभा की तरह ही आज गुरुदेव ने देखा, भले ही अडसढ़ वर्ष की अवस्था है, परन्तु योग्यता विशिष्ट है, इस गहराई को जाना। परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के प्रसंग अनेक हैं, जिनको मैं यथासमय कहता रहूँगा, गुण गाता रहूँगा। परन्तु अभी इतना ही कहूँगा कि गुरुदेव का वरद्हस्त, उनकी अनुकम्पा से ही मैं आज इस जीवन में आगे बढ़ा, साथ में पूज्य म.सा. का मुझ पर अनन्त उपकार है, वात्सल्यमय पिता व ममतामयी माता को छोड़कर निकला, परन्तु आपने इतना वात्सल्य एवं ममता दी - कि जीवन में कभी उनकी कमी महसूस ही नहीं होने दी। आज मेरा कर्त्तव्य है- इन महापुरुषों ने मुझे बहुत दिया है, जीवन-निर्माण किया है, आपके शासन व अनुशासन में रत्नत्रय की मैं अभिवृद्धि करता रहूँ। आपसे (श्रावक-श्राविकाओं से) निवेदन है कि बाहर की चर्चा और पंचायती को छोड़कर अपने जीवन में रत्नत्रय की प्रगति का आयाम प्रस्तुत करना है। अब हमें हमारे विकास का चिन्तन करना है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र के आधार पर ही संघ, विकास के राजमार्ग पर बढ़ सकता है।

प्रकृति ने तो कल घोषणा के पूर्व ही पूज्य म.सा. को अग्रिम बधाई दे दी थी, प्रातःकाल से ही वर्षा की अविरल धारा प्रवाहित हो रही थी, जैसे कि प्रकृति को पहले ही आभास हो गया हो। आज मुझे बधाई प्रेषित करने का अवसर मिला है। मैं आपके चरणों में निवेदन करता हूँ- आज तक आपने महान् कृपादृष्टि रखी, आगे भी ऐसी ही

कृपा बनाये रखेंगे। गुरुदेव ने आपको जिम्मेदारी सौंपी- हम सभी आपके सहयोगी रहेंगे। आपको जो दायित्व सौंपा है, उसको वहन करने में आप सक्षम हैं, मजबूत कंधे वाला वृषभ मंजिल पर पहुँचता है। इसी प्रकार आपके कंधे भी इस दायित्व को निर्वहन करने में सक्षम है। अन्त में हृदय के भावों के साथ कोटि-कोटि बधाई।

श्रद्धेय श्री गुणवन्तमुनिजी म.सा. द्वारा गीतिका के माध्यम से उद्गार–

मन महेन्द्रमुनिसा के गुण गाये जा, चरणों में शीश झुकाये जा।। टेर।।
दिन श्रावणसुदी 9 आया, माता सोहनी दिल आनन्द छाया।
पारसमल सा मन हर्षाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 1।।
दिन वैशाख सुदी 14 आया, गुरु हस्ती से संयम पाया,
गुरु चरणों में रह ज्ञान पाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 2।।
जोधपुर में ही जन्म पाया है, जोधपुर में ही संयम पाया है,
जोधपुर का गौरव बढ़ाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 3।।
गुरु चरणों में श्रद्धा रखकर के गहरा, शास्त्र ज्ञान पाया है,
सरस वाणी से अमृत बरसाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 4।।
गुरु सेवा में सदा तत्पर रहते, सन्तों की सेवा मन से करते,
गुरु हीरा भक्त हनुमान कहाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 5।।
तपस्या भी आप हमेशा करते रहते, आलस्य प्रमाद नहीं करते,
अध्यवसायी पदवी पायेजा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 6।।
दिन भादवा सुदी 5 आया, रत्नसंघ में आनन्द छाया,
भावी आचार्य पदवी पायेजा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 7।।
चरणों में 'गुणवन्त' वन्दन करता, चेहरा देख मन खिल जाता,
सन्त-सतीयों पर भी कृपा बरसाये जा, मन महेन्द्रमुनिसा............ ।। 8।।

व्याख्यात्री महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. के उद्गारः–

पंच परमेष्ठि को नमन, पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्य श्री को भावपूर्ण वन्दन-नमन!

हमें आज बात अभाव की करनी है।

1. **प्राग् अभावः**– वर्तमान में भूतकाल की पर्याय का अभाव। अर्थात् जो वर्तमान में सिद्ध है, उनमें संसारी अवस्था का अभाव है।
2. **प्रध्वंस अभावः**– वर्तमान में भविष्य का अभाव। अर्थात् वर्तमान में भविष्य का अभाव।
3. **अन्योन्य अभावः**– पुद्गल द्रव्य की वर्तमान पर्याय में अन्य पुद्गल की वर्तमान पर्याय का अभाव। मुँहपत्ती में आसन का अभाव।

4. **अत्यन्त अभाव**:— एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य में त्रिकाल अभाव। जीव में अजीव का अभाव।

तो हमें आज बात ऐसे महापुरुष की करनी है, जो चाहे वर्तमान में संसार में है, मगर भविष्य में सिद्ध होंगे।

कहा भी है- समर्पण से साधना का प्रारम्भ होता है व सिद्धत्व से साधना का अन्त होता है।

ऐसी साधना-आराधना में अप्रमत्त बन आगे बढ़ने वाले, सेवा में तत्पर रहने वाले भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. जिनके जीवन में सहयोग की भावना भी अति सुन्दर रही हुई है।

स— यानि समर्पण दो प्रकार का- मिलना और घुलना। दूध में पानी मिलाने पर अग्नि के ताप से पानी भाप बन जाता है यानी दूध से अलग हो जाता है। मगर दूध में शक्कर के घुल जाने पर किसी अग्नि के ताप की ताकत नहीं कि शक्कर, दूध को अलग कर सके। भावी आचार्यप्रवर का गुरु हीरा के प्रति जो समर्पण है- वह मिलने वाला नहीं, घुलने वाला है।

ह— यानि हृदयवान होना। आपकी करुणा, अनुकम्पा, दुःखी को देख द्रवित हो जाना, आपके सम्यक्त्वी होने का गारण्टी कार्ड है।

यो— यानि योजनाबद्ध कार्य। आपकी दिनचर्या को देखकर समझ आता है कि सब कुछ करते हुए भी आपका स्वाध्याय क्रम निरन्तर गतिमान रहता है।

ग— गर्व रहित होना। आपश्री ने प्रवचन में फरमाया कि जिन्हें आत्मशुद्धि करनी है- वे गुरुदेव के पास प्रायश्चित्त ले शुद्धिकरण कर सकते हैं। मगर भगवन् ने ये कार्य आपश्री को सौंपा हुआ था, लेकिन आपको उसका कोई अहंकार नहीं। कल ही हमने देखा भगवन के द्वारा भावी आचार्य की घोषणा किये जाने पर श्रद्धेय महाराज साहब (महान् अध्यवसायी, भावी आचार्यश्री) ने बहुत ही सुन्दर भाव फरमायें।

ये कब होता है- जब भीतर में अहंकार का अंश भी ना हो और जीवन विनय से पूरित हो।

मन ने, हृदय से एक प्रश्न किया- कौन होते हैं आचार्य? तो हृदय ने बड़ी श्रद्धा से, बड़ी आस्था से कहा- सुनो मेरे मन! कौन होते हैं आचार्य!

1. जिनके जीवन में शास्त्र स्वयं व्याख्या पा जाये।
2. सिद्धान्त सत्य बनकर, उभर आये।
3. पूर्व-अपूर्व श्रुत सा नजर आये।
4. ज्ञान-विज्ञान बनकर आत्मज्ञान में समा जाये- वे होते हैं आचार्य।

हम अनंत पुण्यवान हैं कि- हमें आज से एक नहीं- दो आचार्यों के दर्शन-वन्दन का लाभ मिलेगा। बस अन्त में- मैं यही कहना चाहूँगी कि- हम क्या गायें आपश्री की गुणगाथा, क्योंकि हर आगम की गाथा ने, गाई है यशोगाथा आपकी।

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी
परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का उद्‌बोधन

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने क्षमापना दिवस के पावन प्रसंग पर दिनांक 12 सितम्बर, 2021 को उद्‌बोधन दिया। जिसका संकलन पीपाड़ शहर के मंत्री श्री सुमतिचन्दजी मेहता ने किया।-सम्पादक

जगत को परम ईष्ट व परम मंगल, पंच परमेष्ठि भगवन्तों को भावपूर्वक वन्दन-नमन। जीवन के अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त को वन्दन-नमन।

धर्मानुरागी बन्धुओं! मेरा मन प्रश्न कर रहा है, आज मेरा बोलने का दिन है या चुप रहने का? मुखर होने का या मौन रहने का?

आज का दिन तो स्व से स्व का चिन्तन करने का दिन है, इस जयवन्त शासन में अनुशासित रहने का दिन है।

बोलना क्यों नहीं? क्योंकि मैं जो कल था, वही आज हूँ। गुरुदेव के शासन में कल भी मैं मुनि पर्याय में था, आज भी हूँ व कल भी मुनि पर्याय में रहूँगा। गुरुदेव ने जो संघ की व्यवस्था की है- वो भविष्य की है, वर्तमान में सोचने की आवश्यकता नहीं है। सभी व्यवस्थाओं को आपके (गुरुदेव के) चरणों में रहकर आपके आदेश-निर्देश के अनुसार ही करूँगा। यह पद गुरुदेव ने किस सोच व समझ से दिया, यह मुझे मालुम नहीं, मैं तो मुनि पर्याय में ही जीना चाहता हूँ, चतुर्विध संघ मुझे सहयोग करें, मैं इसलिए नहीं बोलना चाहता हूँ क्योंकि चतुर्विध संघ आज मुझे अलग दृष्टि से, अलग स्वरूप में, मुझे देख रहा है। गुरुदेव ने संघ की व्यवस्था दी है, उसका मैं समादर करता हूँ, लेकिन गुरुदेव के जयवंत शासन में मेरे लिए अलंकार आदि का उच्चारण, उपयोग ना करें। गुरु आज्ञा के आगे मैं न कुछ कहना चाहता हूँ, न बोलना चाहता हूँ। मैंने गुरुदेव की आज्ञा का पालन आगम की उक्ति ''आणाए मामगं धम्मं'' के साथ अपना कर्त्तव्य समझ कर किया है, आपके शासन की दीप्ति हेतु मैं कटिबद्ध हूँ, लेकिन वर्तमान में व्यवस्था हेतु आपसे निवेदन है मुझे मुक्त रखें, मन की चाहना भी नहीं है। मैं तो आज तक आपकी सेवा में रहा, मुझे तो एक भी स्वतन्त्र चातुर्मास का अनुभव नहीं है, फिर भी गुरुदेव ने मुझे जो चार-संघ की जिम्मेदारी दी है- यह गुरुदेव का महान् उपकार है, बोलना, आज मैं इसलिए चाहता हूँ- क्योंकि आज मुझे उपकारी के उपकारों की बात कहनी है- भले ही आज गुरुदेव के चौविहार उपवास चल रहा है, लेकिन- गुरुदेव महान् हैं। आपने संघ अभ्युदय हेतु एक-दो घण्टे का समय ही नहीं, पूरी 83 वर्ष की उम्र में 59 वर्ष की दीक्षा पर्याय में अपना सर्वस्व संघ हेतु समर्पित किया है, कर रहे हैं व करते रहेंगे। आपने आज तक संघ को सब कुछ दिया है, दे रहे हैं, देते रहेंगे। बोलना- आज मुझे उपकारियों के उपकार के लिए है। मुझ पर आज मेरे सांसारिक परिवार वालों का अनन्त-अनन्त उपकार है। मेरे माता-पिता,

भाई-भाभियों का अनन्त उपकार है, मैं आज अपने भुआजी को भी नहीं भूलूँगा, जिनका मेरी दीक्षा में, अन्तर से, बाहर से खूब सहयोग व उपकार रहा। गुरुचरणों में पिता- पारस व माता- सोहनी को छोड़कर आया, पर यहाँ पर मुझे पिता जैसा वात्सल्य गुरु हस्ती से व माता जैसी ममता गुरु हीरा से प्राप्त हुई। मैं भाग्यशाली हूँ, मुझे दोनों गुरुदेवों का प्यार व दुलार प्राप्त हुआ। मुझे अनेक बातें कहनी है- वे याद आ रही हैं, जिन्हें मैं समय-समय पर कहता रहूँगा। गुरुदेव ने मेरा जीवन गढ़ा व संवारा है। इस अल्पज्ञ को आज महान् बनाया है, गुरुदेव ने अपने अनन्त पुरुषार्थ से मुझे तैयार किया है। भव-भव में भी, मैं इनके उपकारों से उऋृण नहीं हो सकता हूँ। इन महापुरुषों के लिए जितना कहा जावे, उतना कम है। गुरु का उपकार है। जो आज सभी सन्त-सतीवृन्द व संघ बधाई दे रहे हैं, परन्तु बधाई से पेट भरने वाला नहीं है। जिस उत्साह उमंग से आप बधाई दे रहे हैं, उसी बधाई की तरह उत्साहपूर्वक सहयोग करें। आज तक संघ को सहयोग से वर्धापित किया है, वैसे ही जयवन्त शासन को सहयोग की भावना से बढ़ाते रहेंगे- तो ही- बधाई स्वीकार है।

हमारे गुरुदेव सागर से भी अधिक गंभीर है, गहन है, देखा कल का आपने नजारा, सभी संत-सतीवृन्द दिन रात साथ में है, फिर भी किसी को पता नहीं कि गुरुदेव ऐसी घोषणा करेंगे।

नाम किसी का भी हो, संघ में साथ सभी का होता है। कहते हैं-

''किसी का नाम होता है, किसी का काम होता है।
जलती तो बाती है, पर दीपक का नाम होता है।।''

बिना संतों के सहयोग से सेवा भी नहीं हो सकती है, हमारे देवेन्द्रमुनिसा चौबीस घण्टे ही बॉडीगार्ड की तरह सेवा में तत्पर रहते हैं, पर इनको भी और किसी को भी पता नहीं था कि गुरुदेव इस तरह निर्णय करने वाले हैं। मुझे चार-पाँच दिन पूर्व इतिहास के कई उदाहरणों द्वारा बताया कि किस प्रकार अपने आपको गौण करते हुए, संघ की दीप्ति को बढ़ाना, भूतकाल की घटनाओं को बताते हुए, भविष्य में किस प्रकार संघ को सक्षम, समृद्ध बनाने हेतु प्रेरणा प्रदान की है- इन बातों से मुझे जरूर थोड़ा आभास हुआ कि गुरुदेव द्वारा कोई निर्णय होना है, पर इतना जल्दी व इस दिन होगा- यह मुझे भी पता नहीं था। अभी चातुर्मासकाल है, वरिष्ठ संतरत्न श्री गौतममुनिजी म. सा., श्री नंदीषेणमुनिजी म. सा., श्री प्रमोदमुनिजी म. सा. दूरस्थ विराज रहे हैं। साध्वीप्रमुखा जी तथा बड़ी साध्वियाँ भी नहीं है। सहज में पर्वाधिराज पर्युषण की साधना-आराधना हेतु आये हुए श्रद्धालुओं की धर्मसभा में घोषणा होगी, किसी को पता नहीं था और गुरुदेव ने इस घोषणा से सबको आश्चर्य में डाल दिया। गुरुदेव ने यह घोषणा संघ के भविष्य की सुरक्षा हेतु की है, परन्तु वर्तमान हेतु यह घोषणा नहीं है। आप मुझे बाँधें नहीं, सेवा कार्य करने से व्यक्ति की महिमा घटती नहीं है। सेवा तो एक आदर्श है, चौदह पूर्वधारी गौतमस्वामी भी बेले-बेले की तपस्या कर, स्वयं गोचरी हेतु पधारते थे, तो मैं मुनि पर्याय में जाऊँ- इसमें कोई बाधा नहीं है। वर्तमान का यह

आदेश भावी हेतु है- नई कोई व्यवस्था स्वीकार नहीं है। बैठने आदि की व्यवस्था पूर्ववत् ही रहेगी। पट्टे पर चौकी लगाकर बैठने से नहीं, गुरु आज्ञा, आराधना, सहयोग से ही यह रत्नसंघ की गौरवशाली परम्परा आगे बढ़ी है। आप सहकार में चरणों की धूल के बजाय फूल बने। आचार्यप्रवर पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. 65 वर्ष की वय में गोचरी जा सकते हैं- मैं क्यों नहीं। हमारे गुरुदेव का आदर्श रहा है, भावी की व्यवस्था भले ही मुझे दी है, पर स्वयं इस पद पर रहते हुए भी छोटे मुनि चाहे वो योगेशमुनिजी हो, मनीषमुनिजी हो, विनम्रमुनिजी या रवीन्द्रमुनिजी, या चाहे वृद्ध संत हो, बाल संत हो सेवा का अवसर आवे तो तैयार रहते हैं, सेवा से कोई छोटा नहीं होता, पद की गरिमा कम नहीं होती। गुरु हस्ती 66 वर्ष की उम्र में भी सेवा के हर कार्य में तत्पर रहते थे। सोईन्तरा गांव की बात है- विहार में तीन संत ही थे, आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सिर पर चोट थी, उपचार चालू था, आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के साथ शीतलमुनिजी म.सा. थे, भयंकर गर्मी का समय था, नौ मील का विहार कर सोईन्तरा पहुँचे, शीतलमुनिसा गोचरी में पधार गये, मैं पानी लेकर आया। उसमें जीवाणी निकल गयी, मुझे जीवाणी निकालना आता नहीं था, मैं तो घर में कुँवारे पद पर था तथा यहाँ भी छोटा था। प्यास भी भयंकर लग रही थी, मन में चिन्तन था, शीतलमुनिजी म.सा. कब पधारेंगे, लेकिन गुरुदेव स्वयं (गुरु हस्ती) उठकर आये, जीवाणी भी निकाली व कृपा करके विधि भी बतायी; फिर पानी वापरने से कण्ठ तृप्त हुआ, ऐसे ही गोविन्दगढ़ की बात है- अजमेर से पहले चार संत थे, मैं नया था, छोटे लक्ष्मीचन्दजी म.सा. थे। विहार चल रहा था। गुरुदेव आगे पधार गये, मैं साथ में था। दो संत पीछे आ रहे थे। पहुँचने के बाद गुरुदेव स्वयं पात्र लेकर 67 वर्ष की उम्र में पानी लाने को तत्पर थे। मैं उस आदर्श परम्परा में पला हूँ। मैं लाने हेतु तैयार था, परन्तु गुरुदेव ने कहा तू थका हुआ है, तुझे घरों की जानकारी नहीं है। मेरे बार-बार आग्रह करने पर पानी लाने हेतु, घरों की जानकारी प्रदान कर महती कृपा की।

श्रद्धेय दयामुनिजी म.सा., श्रद्धेय कैलाशमुनिजी म.सा. जिनका स्वर्गगमन हो गया, ज्ञानमुनिजी अस्वस्थ हो गये। आचार्य पद पर होते हुए भी आंगन पर बैठकर (गुरु हीरा) स्वयं सेवा में लग गये। यह है आचार्य पद पर रहकर सेवा का आदर्श, कभी जरूरत पड़ने पर स्वयं प्रतिलेखना आदि सेवा कार्य भी कर देते। अभी-अभी पर्युषण से पूर्व रवीन्द्रमुनिजी का लोच था, जिनका लोच बहुत कठिन है, परन्तु इनका धैर्य जबरदस्त है, तीन घण्टे लगते हैं, हर बार दो संतों के सहयोग से होता है, यहाँ पर अभी सन्तों की कमी है, मनीषमुनिजी व्याख्यान में पधारे, हालांकि महासतियाँजी विराज रही है, अकेले महासतियाँजी भी एक घण्टे व्याख्यान देने हेतु तत्पर है, परन्तु आचार्य श्री विराज रहे हैं, गुरु सभा में वे प्रारम्भ में व्याख्यान देवे- यह उचित नहीं है, मनीषमुनिजी ने भी कहा- मैं वापस आकर सहयोग कर दूँगा, परन्तु 83 वर्ष की उम्र में उतरने-चढ़ने में श्वांस भरता है, फिर भी गुरुदेव स्वयं ऊपर पधार गये, गुरुदेव के अचानक पधारने से हम आश्चर्य में पड़ गये। पृच्छा की- भगवन्! आप कैसे पधारे?

गुरुदेव ने कहा भाई तुम सब इतनी सेवा करते हो- कुछ मैं भी तो करुँ, गुरुदेव के वचन सुनते ही मेरा कमजोर हृदय पिघल गया, गुरुदेव ने हाथ में राख ली व लोच करने विराज गये। मैंने कहा अभी मनीषमुनिजी आ जायेंगे, परन्तु नहीं, इस उम्र में इस पद पर होते हुए भी हमारे गुरुदेव छोटे-छोटे कार्य करने में भी संकोच नहीं करते हैं। मैंने रवीन्द्रमुनिजी को कहा कि गुरुदेव के हाथ लग गये, तुम्हारा तो कल्याण हो गया। रवीन्द्रमुनिजी की दीक्षा के बाद पहली बार गुरुदेव के हाथों से लौच कराने का मौका मिला। ऐसे सरल और महान् हैं हमारे गुरुदेव। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि इन आदर्श महापुरुषों को देखते हुए मुझ पर प्रतिबन्ध उचित नहीं है। मुझे व्यवस्था संघ हेतु गुरुदेव ने भावी के लिये दी है, वो स्वीकार है, व्यवस्था में अब कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। चार वर्ष से बात चल रही है, मोफतराजसा ने भी मुझे निवेदन किया था, मैंने कहा- मेरी एक प्रतिशत भी इच्छा नहीं है गुरुदेव यह व्यवस्था किसी और को देवें। इस पद हेतु अनेक गुणी संत संघ में हैं। दीक्षा पर्याय में छोटों को भी गुरुदेव यह व्यवस्था दे सकते हैं, मेरे मन में रत्ती मात्र भी चिन्तन नहीं रहेगा, सुमति बाबू ने कहा- यह सेवा का पुरस्कार मिला है, नहीं- मुझे तो हमेशा गुरुदेव के आदेश-निर्देश की पालना करते हुए सेवा में ही रहना है। गुरु हस्ती ने मुझे यह वचन फरमाया था कि तुम्हें- इनकी (आचार्य श्री हीरा की) सेवा में रहना है। मैं कितनी सेवा कर पाया या नहीं, यह बात अलग है। सेवा में रहने से ही लोगों में भ्रम था, लेकिन सेवा में रहने से ही पद मिलता तो पहले ही दे देते। मगर गुरुदेव हर बात का मंथन करते हैं। सोचते हैं। गुरुदेव ने आगे का सोचते हुए- निर्णय फरमाया है। मन की इच्छा ना होते हुए भी स्वीकार है, परन्तु निवेदन यही बारम्बार है आपके जयवंत शासन में मैं आचार्य नहीं, मुनि पर्याय में ही रहूँगा। आपकी कृपा का वर्षण सदा रहे, उत्तरदायित्व आपका ही है। आपको ही संभालना है, आपकी सन्निधि में मेरी योग्यता का विकास हुआ है, आगे भी आपको ही करना है। आपके विराजते हुए मुझे ना किसी बात का चिन्तन करना है, ना चिन्ता करनी है। आपने आज तक बहुत दिया ही दिया है, संभाला ही संभाला है, ऐसे ही संभालते रहें, आपके अनन्त उपकारों को याद करता रहूँ- बारम्बार गुरुदेव से यही निवेदन है कि आपका वरद्हस्त बना रहे, छत्र-छाया बनी रहे। चतुर्विध संघ से क्षमायाचना, उपदेश में, आदेश में, निर्देश में संत-सतियों से भी पालना में, गोचरी, वाचनी में किसी का दिल दुःखा हो तो चतुर्विध संघ से क्षमायाचना करता हूँ।

रत्नसंघ के ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ संतरत्न भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का संक्षिप्त परिचय

गुरु हस्ती-गुरु हीरा की जननी-जन्मभूमि पुण्यधरा पीपाड़ के चातुर्मास में संवत्सरी महापर्व के दिन आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने आचार्य

भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के सुशिष्य एवं आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती एवं सेवाभावी संतरत्न को रत्नसंघ के भावी आचार्य के रूप में घोषित किया है, जिसका आबाल-वृद्ध सभी से संघहित में सन्तुष्टि सुनने को मिल रही है।

महामंदिर-जोधपुर में लोढ़ा परिवार में संघ-सेवी, संत-सेवी, सेवाभावी श्रावकरत्न वीरपिता श्री पारसमलजी लोढ़ा के घर-आंगन में सरलहृदया-सेवाभावी सुश्राविका वीरमाता श्रीमती सोहनकुंवरजी लोढ़ा की रत्नकुक्षि से वि.सं. 2011, श्रावण शुक्ला नवमी, रविवार, तदनुसार 08 अगस्त 1954 को जन्में बालक ने पूर्वभव की पुण्यवानी से स्वस्थ तन-स्वस्थ मन तो पाया ही, परिपूर्ण इन्द्रियाँ व लम्बा आयुष्य भी प्राप्त किया।

लाड़-दुलार से पले बालक ने जोधपुर की प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान में ग्रेजुएट (स्नातक) तक का व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया। परिवार के संस्कारों से संस्कारित उस युवक ने धार्मिक अध्ययन में भी रुचि व भावना से काफी-कुछ सीखा।

युवावस्था में धर्माचार्य-धर्मगुरु की सेवा-सन्निधि से ज्ञानाभ्यास करते-करते जब अध्यात्मयोगी-युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का प्रेरक-प्रभावी जीवन देखा तो युवाहृदय में संयम की महत्ता का बोध जागृत हुआ। गुरु हस्ती की सन्निधि से प्रभावित युवाहृदय के मन-मस्तिष्क में दीक्षित होकर शासन-सेवा में लगने की पुरजोर भावना से उन्होंने माता-पिता एवं पारिवारिक-परिजनों से दीक्षा की आज्ञा-अनुमति तो ली ही, गुरुवर्य से सदा-सदा के लिए श्रीचरणों में रहने की बात भी कही। दीर्घदृष्टा गुरु हस्ती ने वि.सं. 2032 की वैशाख शुक्ला चतुर्दशी तदनुसार 24 मई, 1975 को सूर्यनगरी-जोधपुर में युवाहृदय को भागवती दीक्षा प्रदान कर संयमी-जीवन में प्रवेश करवाया।

स्व-पर कल्याण कामना से दीक्षित संतरत्न ने आचार्य भगवन्त से बोल-थोकड़ों एवं शास्त्रों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया। गुरु हस्ती ने मुनिश्री की योग्यता-क्षमता-पात्रता देखकर ''महान् अध्यवसायी'' जैसा गौरवशाली पद प्रदान किया।

गुरु हस्ती के स्वर्ग-गमन पश्चात् महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा की सेवा-सन्निधि और आज्ञा-अनुशासन में अपने-आपको समर्पित कर दिया। गुरु भ्राता ने गुरु के रूप में सेवा-भक्ति में विशिष्ट समर्पण होने से आचार्य श्री हीरा ने ''सरस व्याख्यानी'' पद प्रदान किया। संघ व्यवस्था में संघनायक के निर्देश-आदेश-संकेत को चरितार्थ कर रत्नसंघ में वर्तमान में ज्येष्ठ व श्रेष्ठ संतरत्न के रूप में जन-जन के मन में छा गये।

पुण्यधरा-पीपाड़ के चातुर्मास में महापर्व संवत्सरी के पावन-दिवस पर वि.सं. 2078, भाद्रपद शुक्ला पंचमी, शनिवार तदनुसार 11 सितम्बर, 2021 को आचार्यप्रवर

पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने महान् अध्यवसायी-सरस व्याख्यानी श्री महेन्द्र मुनिजी महाराज का भावी आचार्य के रूप में मनोनयन किया तो जन समुदाय ने हर्षित-उल्लसित मन से श्रमण भगवान महावीर स्वामी की जय, प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय। जय-जयकार के गगनभेदी जयनादों ने एक ओर जहाँ गुरु हीरा के अकस्मात्, किन्तु साहसी कदम के प्रति हर्ष व्यक्त किया, वहीं भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म. सा. के ज्ञान व अनुभव से संघ ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होगा, इसकी शुभकामना प्रस्तुत की।

श्रावक संघ ने संवत्सरी महापर्व के दूसरे दिन प्रातः सामूहिक क्षमायाचना एवं नव-मनोनीत भावी आचार्य के प्रति शुभकामना का कार्यक्रम रखा। कार्यक्रम में सभी संत-मुनिराजों ने एवं महासतीवर्याओं ने संक्षेप में, किन्तु अन्तर्मन के भावों से भावी आचार्यश्री के प्रति पूरा-पूरा सहयोग-समर्थन तो व्यक्त किया ही, पीपाड़शहर के प्रबुद्ध एवं सुज्ञ श्रावकों ने भी संघनायक गुरु हीरा के सार्थक सद्प्रयास को संघहित में मानने व कहने के साथ दोनों महापुरुषों की स्वास्थ्य-समाधि समीचीन रहने तथा सुदीर्घ आयुष्य की मंगलकामना की। क्षमायाचना के साथ व्यक्त उद्गार संघहित में सदा-सर्वदा सार्थक प्रयास के रूप में प्रेरणादायी होंगे।

-नौरतनमल मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी

अभिनन्दन–अभिवन्दन

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति एवं रात्रिभोजन त्याग के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने भाद्रपद शुक्ला पंचमी, वि.सं. 2078, दिनांक 11 सितम्बर, 2021 को रत्नसंघ के सबसे वरिष्ठ संत महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी **श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को संघ का भावी आचार्य घोषित किया है।** हम सब इस घोषणा का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करते हैं तथा भावी आचार्य का अभिवन्दन करते हैं।

संयोजक एवं समस्त सदस्य-संरक्षक मण्डल
संयोजक एवं समस्त सदस्य-शासन सेवा समिति
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल
अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्
संयोजक एवं समस्त सदस्य- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
संयोजक एवं समस्त सदस्य- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
संयोजक एवं समस्त सदस्य-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के वर्षावास में ज्ञानाराधना, धर्माराधना तथा तपाराधना से आत्मविशुद्धि कर धन्य हुए पीपाड़ वासी

महासती श्री खुशबू जी म.सा. के मासक्षपण की तपस्या

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, रात्रिभोज त्याग एवं शीलखंध के प्रबल प्रेरक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय **आचार्यप्रवर पूज्य श्री** 1008 **श्री हीराचन्द्र जी म.सा., भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-6 श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन एवं व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 महिला स्वाध्याय भवन, पीपाड़ शहर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान है। पूज्य आचार्यप्रवर गहन मौन, मितभाषी होकर ब्रह्ममुहुर्त्त से लेकर रात्रि तक दैनिक साधना-आराधना के साथ सतत् स्वाध्यायलीन रहते हैं। श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ दर्शन-वन्दन करते हैं तो अविचल साधना में महापुरुषों की सततता को निहारते ही रहते है। भक्तों को अपलक भाव से निहार कर मांगलिक हेतु जैसे ही हाथ ऊपर करते हैं- श्रद्धालु श्रद्धा से नतमस्तक होकर, सकारात्मक भावों से भर उठते है।

भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के साध्वाचार की अप्रमत्त, अन्तर्चेतना का बाहर-भीतर सक्रिय स्वरूप एवं सन्तुलन से सभी चिरपरिचित है जो कि धाय माँ के विरुद से उपमित है। आपश्री के साध्वाचार, साधना, आराधना, संघीय व्यवस्थाओं एवं दैनिक चर्या के हर कृत्य में विनय भाव, सेवाभावना से सतत् सन्नद्धता के साथ प्रवचन, वाचनी, गोचरी आदि में अथक गतिशीलता के साथ सभी सन्त-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविका अर्थात् चतुर्विध संघ को सर्वोपरि मानकर स्वसाधना करते हुए एवं स्व-पर कल्याणार्थ सजग सक्रियता प्रेरणा-पुरुषार्थ से सभी विस्मित होकर आनन्द एवं ऊर्जा की अनुभूति के साथ सश्रद्धा नतमस्तक होकर स्वात्मा को भावित करने की अभिप्सा से यथारूचि, यथाशक्य तप-त्याग, व्रत- प्रत्याख्यान, सामायिक-स्वाध्याय, जप आदि नियम ग्रहण करते हैं।

वीर प्रसूता पावन पुण्यधरा पीपाड़शहर सन् 1997 के बाद अब 2021 में रत्नसंघीय आचार्यप्रवर का चातुर्मासिक संयोग प्राप्त होने से सभी को दिन-रात ज्ञानाराधना, धर्माराधना, संवर-साधना का सुयोग प्राप्त हुआ। पीपाड़ संघ के सभी श्रावक-श्राविका, युवारत्न बन्धु, आबाल-वृद्ध में धर्मोल्लास व्याप्त है। सभी संघ सदस्य सुरक्षित-संरक्षित सुव्यवस्था के प्रति सजगतापूर्वक सेवा सन्नद्ध एवं धर्म ध्यान में रुचि ले रहे है। प्रवचन प्रभावना में भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनिजी म.सा.

के द्वारा प्रवचन फरमाया जा रहा है, जिसे सभी श्रावक-श्राविका रुचिपूर्वक श्रवण कर श्रद्धा के साथ धर्म साधना-आराधना में आगे बढ़ रहे हैं।

दैनिक कार्यक्रमों के क्रम में प्रातः सूर्योदय पश्चात् प्रार्थना श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनिजी म.सा. करवा रहे हैं। तत्पश्चात् प्रातः 8.45 बजे से 10.00 बजे तक प्रवचन होता है। प्रतिदिन 10 बजे से 11 बजे तक एवं दोपहर में 3.00 से 4.00 बजे तक थोकड़ों की कक्षाएँ एवं रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात् 8.45 से 9.45 बजे तक बोधिशाला कक्षा के माध्यम से श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. सुगम सुबोध सरल भाषा में ज्ञानार्जन करवा रहे हैं।

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणांग सूत्र की वाचना पूर्ण होने पर सुखविपाक सूत्र की वाचना फरमा रहे हैं। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. धार्मिक शिक्षण कराते हैं, जिनके सरल, सुबोध विवेचन से धर्मश्रवण करने वालों में सहज जिज्ञासाओं का प्रादुर्भाव होता है। सभी की जिज्ञासाओं का समाधान भी करते हैं। श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. कर्मग्रन्थ विषय पर ज्ञार्नाजन करवा रहे हैं।

व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में महिला स्वाध्याय भवन में दोपहर 1.45 से 2.45 बजे तक 59 थोकड़ों की कक्षा चल रही है।

जैन धर्म संस्कार पाठशाला के बालक-बालिकाएँ ज्ञानार्जन में रुचि के साथ सायंकाल समूह में एकत्रित होकर पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन का लाभ लेने के साथ बाल सुलभ उत्साह उमंग के साथ मनोरम वातावरण सृजित कर देते हैं। प्रतिदिन प्रति-एक घर में सुबह 8 बजे से सायंकाल 6 बजे तक अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप चल रहा है। युवक परिषद् के सदस्य पूज्य गुरुचरण सन्निधि में एवं श्राविका मण्डल एवं युवती मण्डल की सदस्याएँ महासती मण्डल की सेवा में क्रमिक संवर साधना का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

गुरुदेव के चरणों में प्रातःकाल 10.30 से 11.30 बजे तक तथा दोपहर पश्चात् 3.00 से 4.30 बजे तक निर्धारित दूरी से श्रावक-श्राविकाएँ अपने भाव, जिज्ञासा प्रगट कर समाधान एवं व्रत-प्रत्याख्यान, नियम ग्रहण कर रहे हैं।

चातुर्मास के प्रथम माह से ही तपस्याओं का क्रम अनवरत रूप से चल रहा है। विविध तपाराधना का क्रम जारी है। कोरोनाकाल से आंशिक राहत मिलते ही, तपाराधकों का ऐसा रुख बना कि जैसे सभी तपाराधक काफी समय से तपाराधना करने के लिए लालायित हो। सभी तपाराधकों के हृदयोद्गार उनको गुरुचरण सन्निधि का सुयोग प्राप्त होने एवं तपाराधना करने के भावों को परिलक्षित करते हैं।

संघमंत्री युवारत्न श्री नमनजी मेहता ने चातुर्मासिक पर्व के दिन अठाई तपाराधना का अर्घ्य आराध्य पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में अर्पित किया। एकासन,

आयंबिल, उपवास, तेला आदि लड़ीबद्ध तपाराधना निरन्तर चल रही है।

व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म. सा. के सहवर्ती महासती श्री खुशबूजी म.सा. को चिकित्सकीय परामर्श से स्वास्थ्य लाभ हेतु तपस्या नहीं करने का कह रखा था, चूंकि उपचार पूर्ण हो चुका था। साध्वीजी की तपस्या की प्रबल भावना थी। साध्वाचार में तपस्या साधक के लिए संयम विशुद्धि एवं कर्मनिर्जरा का अचूक उपाय होता है। गुरुदर्शन करके गुरुचरणों में महासतीजी ने तपाराधना करने के भाव व्यक्त किये तो पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि समाधि हो तो तप सार्थक है। तप से समाधि हो, समाधिपूर्वक तप हो, जब तक साता हो, तब तक करना जबरदस्ती से नहीं करना। कमजोर शरीर वाली साध्वीजी ने अपने मासक्षपण की तपाराधना निर्विघ्न, ससमाधि, दैनिक क्रियाओं में गतिशील रहते हुए पूर्ण की। तपस्या एवं पारणक सुख शान्ति के साथ सम्पन्न हुए।

इसी प्रकार विशेष तपस्या के रूप में पौषध सहित वयोवृद्धा तपस्विनी श्राविकारत्न श्रीमती लीलाबाईजी कटारिया (पीपाड़) 84 वर्ष की अवस्था में परिवारजनों के सहयोग से नियमित स्थानक आकर सामायिक-साधना करते हुए 30 (मासक्षपण) की तपस्या कर गुरुदेव के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त की। श्राविकारत्न श्रीमती प्रियंकाजी कोठारी धर्मसहायिका युवारत्न श्री महावीरजी कोठारी, जो श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. की सांसारिक वीर भाभीजी हैं। उन्होंने भी 30 उपवास की तपस्या कर मासक्षपण तपाराधना का अर्घ्य अर्पित किया तथा युवारत्न श्री महावीरजी बोहरा सुपुत्र श्री मूलचन्दजी बोहरा मूल निवासी रतकुड़िया वालों ने 31 उपवास कर मासक्षपणोपरांत तपाराधना का अर्घ्य अर्पित किया।

तपाराधना के क्रम में 54 तेले, एक पचौला, अठाई- श्री अरिहन्तजी कांकरिया (नागौर), श्री सुशीलजी चतुर, सुश्राविका उषाजी कवाड़-चेन्नई, सुश्राविका मोहिनीजी चोरड़िया, सुश्राविका सपनाजी मेहता तथा 9 की तपस्या सुश्राविका जयश्रीजी गादिया, युवारत्न श्री लक्ष्यजी कोठारी ने एवं एक छह की तपस्या तथा मरुधरा (मारवाड़) आंचल से आये श्रद्धालुओं में सुश्राविका मंजुजी राजेशजी बाफणा-जोधपुर (10 की तपस्या), सुश्राविका निरूपाजी कपिलजी पटवा-जोधपुर ने 21 की तपस्या, सुश्रावक श्री हंसराजजी चौपड़ा-गोटन ने 8 के, सुश्राविका एकताजी लुंकड़ ने 9 की, सुश्राविका श्रीमती सम्पतकंवरजी भण्डारी-पालासनी ने 15 की, सुश्राविका सन्तोषदेवीजी नाहर- हैदराबाद ने 8 की, युवारत्न श्री हिमांशुजी सुराणा ने 8 की, श्री हर्षितजी कोठारी- निमाज ने 8 की, श्री यशस्वीजी ओस्तवाल-गोटन ने 9 की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से ग्रहण किये। इसके अतिरिक्त तेला, उपवास, एकाशन, आयम्बिल की लड़ी निरन्तर चल रही है।

कोरोना महामारी से राहत मिलने, अनलॉक होने से समय-समय पर ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्रों के निकटवर्ती एवं सुदूरवर्ती ग्राम-नगरों-महानगरों से आए भक्त अपने आराध्य पूज्य गुरुदेव की चरण सन्निधि में

दर्शन-वन्दन-मांगलिक श्रवण के साथ सामायिक-स्वाध्याय, तप, जप, दया, संवर, पौषध आदि धर्मचर्चाओं के अर्ध्य अर्पित कर, व्रत-प्रत्याख्यान, नियम आदि पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से ग्रहण कर रहें है। शासन सेवा समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण 17 अगस्त, 2021 को अपने आराध्य पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में दर्शन-वन्दन एवं आवश्यक मार्गदर्शन हेतु उपस्थित हुए।

चातुर्मास के प्रारम्भ से अब तक दैनिक कार्यक्रम, प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, प्रश्नोत्तर, प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध से लेकर छोटी-बड़ी-मध्यम तपश्चर्याओं में सकल जैन समाज पीपाड़ के आबाल-वृद्ध सबकी धर्मरुचि व धर्मभावना उत्तरोत्तर वृद्धिगत होने से एवं पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर देश के सुदुरवर्ती-निकटवर्ती, ग्राम-नगरों-महानगरों से श्रद्धालु-श्रावक- श्राविकाओं का पुण्यधरा पीपाड़ में अपने परमाराध्य के पावन श्री चरणों में आने का क्रम 'कोरोना काल' होने के बावजूद उत्साह, उमंग वाला रहा। आगत श्रद्धालुओं एवं पीपाड़ संघ के आबाल-वृद्ध सभी श्रावक-श्राविकाओं में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर ''महाकुम्भवत्'' भरपूर उपस्थिति, धर्मोल्लास, उत्साह-उमंग के चलते ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना में बना उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। युवक-युवतियों व बालक-बालिकाओं में सामायिक-प्रतिक्रमण, बोल-थोकड़े सीखने की भावना वृद्धिगत हुई। ज्ञानाराधन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने अच्छा पुरुषार्थ किया। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 सहित चतुर्विध संघ का समागम होने से सभी श्रद्धालुओं को, श्रावकों को सन्तों की सेवा में एवं श्राविकाओं को महासतीमण्डल की सेवा में पर्युषण पर्वाराधना का अनुपम लाभ मिला एवं दया, संवर, पौषध, साधना-आराधना का पर्युषण पर्व पर प्रवर्धमान स्वरूप दृष्टिगोचर हुआ।

पीपाड़ के सभी परम्पराओं के सुज्ञजनों, बहिनों और बुजुर्गों ने तपाराधन एवं संवर-पौषध की साधना में अपनी भागीदारी निभाई। राता उपासरा में प्रवचन-सभा में सभी को स्थान सुलभ नहीं होने से संघमंत्री, अध्यक्ष की भावना से जयभवन में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के प्रवचन का कार्यक्रम आठों दिवस चला।

देश के विभिन्न सुदूरवर्ती-निकटवर्ती क्षेत्रों से गुरुचरण सन्निधि में आठ दिवसीय साधना-आराधना हेतु आबाल-वृद्ध श्रद्धालु श्राविकाएँ बंगारपेट, गोटन, कुम्भकोणम, बैंगलोर, ब्यावर, जैतारण, चेन्नई, जयपुर, खेरली, नागौर, जोधपुर, कलकत्ता, मेड़ता, निमाज, धनारीकलां, सवाईमाधोपुर, आलनपुर, बाबई, कोटा, मैसूर, कोप्पल, कोलीडम, पीपलियाँकलां, बलदोरा, बीजापुर, माधोनगर, भड़गांव, लासूर, धूलिया, गदग, बालोतरा, पाली, रतलाम, बल्लारी, पुन्नमल्लै, नोखा, बगड़ी, सियाट, किलपॉक, तिरुवल्लूर, अहमदाबाद, मुम्बई इत्यादिक क्षेत्रों से आये एवं सभी ने प्रार्थना, प्रवचन, अन्तगड़ सूत्र वाचन, उभयकाल प्रतिक्रमण, नवकार मंत्र जाप आदि सभी धर्मचर्याओं में अधिक से अधिक सामायिक, संवर, दया, पौषध यथाशक्ति तपस्या

करते हुए- पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना करते हुए अपने आराध्य के श्री चरणों में विविध ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना एवं साधना-आराधना करके अर्घ्य अर्पित किये।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के अष्टदिवसीय प्रसंग पर लगभग 50 तेले, अनेकों बेले तथा उपवास, एकासन, आयंबिल, नींवी आदि की तपस्या, अनगिनत हुई एवं अठाई एवं अठाई से ऊपर की तपस्याएँ इस प्रकार हैं:- 1. श्रीमती बिमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री कमलजी बोहरा, पीपाड़-8 की, 2. श्रीमती चुक्कीदेवीजी धर्मसहायिका श्री किस्तूरचन्दजी बाघमार, पीपाड़-8 की, 3. सुश्री पलकजी सुपुत्री श्री आशीषजी बोहरा, पीपाड़- 9 की, 4. सुश्री आस्थाजी सुपुत्री श्री श्रेणिकजी कटारिया, पीपाड़- 8 की, 5. श्री किशोरजी लुंकड़, चेन्नई- 8 की, 6. श्रीमती पुष्पादेवी जी धर्मसहायिका श्री राणमलजी कांठेड़, पाली- 8 की, 7. श्री महेन्द्रजी कांठेड़, पाली- 8 की, 8. श्री नरेशजी चौपड़ा, बालोतरा-8 की, 9. श्री धनराजजी भण्डारी, बालोतरा-8 की, 10. सुश्री खुशबूजी सुपुत्री श्री विजयराजजी पारख,पीपाड़-8 की, 11. श्रीमती विजयाजी धर्मसहायिका श्री गौतमचन्दजी कटारिया, पीपाड़- 8 की, 12. श्रीमती दीपिकाजी धर्मसहायिका श्री निखिलजी कटारिया, पीपाड़-8 की, 13. श्री निखिलजी राजेन्द्रजी कटारिया, पीपाड़- 8 की, 14. श्रीमती अंजुजी धर्मसहायिका श्री अशोकजी बोहरा, पीपाड़-8 की, 15. श्री महेन्द्रजी हस्तीमलजी बोहरा, पीपाड़- 8 की, 16. श्री एवं श्रीमती सज्जनराजजी लुणावत (सजोड़े), पीपाड़- 8 की, 17. श्री दिलखुशजी बरड़िया, पीपाड़- 9 की, 18. श्री पदमजी कवाड़, पुन्नमल्लै / पीपाड़- 9 की, 19. सुश्री महिमाजी सुपुत्री श्री महावीरजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 20. श्री अशोकजी सुपुत्र श्री मूलचन्दजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 21. श्रीमती हेमलताजी धर्मसहायिका श्री रमेशचन्दजी बोहरा, पीपाड़-11 की, 22. श्री रमेशचन्दजी सुपुत्र श्री मूलचन्दजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 23. श्री पवनजी सुपुत्र श्री महेन्द्रजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 24. श्रीमती चेतनाजी धर्मसहायिका श्री पवनजी बोहरा, पीपाड़- 11 की, 25. श्रीमती रेखाजी धर्मसहायिका श्री पदमजी लुणावत, पीपाड़- 9 की, 26. श्रीमती पूजाजी धर्मसहायिका दीपकजी मुथा, पीपाड़-13 की, 27. श्री गौतमजी सुपुत्र श्री नवरतनजी मुथा, पीपाड़- 18+होकर बढ़ रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के पावन प्रसंग पर गुरुचरणों में आकर- श्रीमती इन्द्राजी बाफना ने 9 की, श्री किशोरजी लुंकड़, चेन्नई ने 8 की, श्री मनीषजी बागरेचा, गोटन (श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी के सांसारिक बहनोई) ने सात की तपस्या एवं सुश्राविका वन्दनाजी मुथा, चौकड़ीकलां ने 9 की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से ग्रहण किये।

पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के पावन प्रसंग पर राता उपासरा, श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत सामायिक स्वाध्याय भवन, श्री जयमल स्वाध्याय भवन (जय भवन) एवं श्री जयमल महिला स्वाध्याय भवन में चारों ही धर्मस्थानों पर दया, संवर, पौषध करते हुए प्रतिक्रमण, सामायिक-स्वाध्याय साधना-आराधना करने वालों से पूरित रहे तथा

संवत्सरी के दिन तो चारों ही धर्मस्थानों में आगत श्रावक-श्राविकाओं सहित पीपाड़ श्री संघ के चारों संघ के श्रद्धालुओं ने सांवत्सरिक प्रतिक्रमण एवं दया, संवर, पौषध करने पर सभी भवनों में ऊपर-नीचे सभी मंजिलों पर भरपूर उपस्थिति रही। जैसे कि धर्मश्रद्धा का सैलाब आ गया हो एवं 84 लाख जीव योनियों के प्रति क्षमा/मैत्री भाव का महाकुम्भ का दृश्य प्रतित हो रहा था।

पर्युषण महापर्व के प्रसंग के दिवसों में महासतियाँजी एवं महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने प्रवचन फरमाया एवं अन्तगड़ सूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने एवं मध्याह्न में कल्पसूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने फरमाया। संवत्सरी के पश्चात् दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को संघ एवं सहयोगी सस्थाओं के पदाधिकारी गुरुदेव के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष श्री सुभाषचन्दजी गुन्देचा एवं मंत्री श्री नवरतनजी गिड़िया 15 सितम्बर, 2021 को जोधपुर संघ के 250 श्रावक-श्राविकाओं के साथ गुरुदेव के श्रीचरणों में आगामी चातुर्मास की विनती लेकर उपस्थित हुए। श्राविका संघ की अध्यक्षा श्रीमती सुमनजी सिंघवी एवं युवक परिषद् अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने गुरुदेव के श्रीचरणों में जोधपुर संघ की भावभीनी विनति प्रस्तुत की। साथ ही गजेन्द्रजी चौपड़ा ने श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. को भावी आचार्य बनने पर जोधपुर संघ की ओर से बधाई गीत प्रस्तुत किया। 19 सितम्बर को वीरभ्राता श्री जतनराजजी लोढ़ा-जोधपुर अपने परिवार के 50 सदस्यों सहित गुरुचरणों में दर्शनार्थ उपस्थित हुए। इसी दिन संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत गुरुदेव के दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित हुए। 23 सितम्बर, 2021 को पीपाड़ के युवारत्न श्री गौतमजी मुथा सुपुत्र श्री नवरतनमलजी मुथा, सुपौत्र श्री देवराजजी मुथा ने जय भवन की प्रवचन सभा में भावी आचार्य महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से 30 (मासक्षपण) की तपस्या के प्रत्याख्यान ग्रहण किए तथा प्रवचन सभा के पश्चात् पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा में उपस्थित होकर गुरुदेव के मुखारविन्द से 31 के प्रत्याख्यान ग्रहण कर अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति की। प्रातः प्रवचन सभा में श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं भावी आचार्य, परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने तप के महत्त्व पर विशेष प्रकाश डालते हुए युवारत्न श्री गौतमजी मुथा की तपस्या के अनुमोदना के रूप में अधिक से अधिक तपाराधन करने की पूरजोर प्रेरणा प्रदान की। प्रवचन सभा में युवारत्न श्री गौतमजी मुथा की तपस्या के उपलक्ष्य में उनके मित्रगण एवं पारिवारिकजनों श्री गौतमजी गांधी, श्री पंकजजी कोठारी, श्रीमती सपनाजी कांकरिया, सुश्री हिमांक्षीजी एवं सुश्री भव्याजी, संतोषजी ललवाणी, निर्मलजी मुथा, पुर्णिमाजी मुथा, अखिलजी लुणावत, गजेन्द्रजी चौपड़ा एवं शिखाजी संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। पीपाड़ संघ की ओर से तपस्वीरत्न श्री गौतमजी मुथा का माला, शॉल, साफा, सामायिक के उपकरण, प्रशस्ति-पत्र एवं

अभिनन्दन पत्र के माध्यम से सम्मान किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन रत्नसंघ के पूर्व मंत्री श्री परेशजी मुथा ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्रीमान सुमतिचन्दजी मेहता ने किया।

संवत्सरी के पश्चात् विभिन्न संघों का आवागमन निरन्तर जारी है। अब तक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सेवा में उपस्थित होकर निम्नांकित संघों ने दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेते हुए अपने-अपने क्षेत्रों की चातुर्मास एवं शेखेकाल की विनतियें प्रस्तुत की। जिसमें प्रमुख- प्रतापनगर-जोधपुर, महामन्दिर-जोधपुर, कोटा, सोजत रोड़, भोपालगढ़, जयपुर, नागपुर, चेन्नई, मदनगंज-किशनगढ़, मण्डावर, भोपालगढ़, महवा, शिरपुर, धुलिया, सुमेरगंजमण्डी, पाली, गुलेजगढ़, गजेन्द्रगढ़, मुम्बई, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर, जलगाँव, धुलिया, शिरपुर, केलसी, देई आदि।

पीपाड़ श्री संघ में सुव्यवस्थाओं की ओर पूरा ध्यान दिया जा रहा है, चाहे संत-सती हो अथवा आगन्तुक श्रावक-श्राविका, कोरोना काल को देखते हुए सभी की सुरक्षा-सुव्यवस्था के लिए श्रावक संघ सेवारत है। पीपाड़ संघ सभी पधारने वाले दर्शनार्थियों की आवास निवास एवं भोजन व्यवस्था के लिए विशेष रूप से तत्पर हैं। श्रावक संघ, श्राविका संघ, युवक परिषद्, बालिका मण्डल के सभी सदस्य आतिथ्य सत्कार सेवा में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।-गिर्राज जैन

मानसरोवर–जयपुर चातुर्मास में युवावर्ग का विशेष उत्साह

पूज्य गुरूदेव आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.आदि ठाणा 3 के पावन नेश्राय में महावीर भवन,मानसरोवर में 2021 का वर्षावास धर्माराधना के साथ अनवरत गतिमान है। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन,दोपहर में वाचनी आदि में जयपुर के श्रावक, श्राविकायें अभूतपूर्वक उत्साह व उमंग के साथ अधिक से अधिक धर्मलाभ लेने की भावना व लक्ष्य के साथ भाग ले रहे हैं। बाहर से पधारने वाले दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है।

चातुर्मास हेतु मुनि श्री के पदार्पण के साथ ही धर्म ध्यान की अलख जगी हुई है जो पर्युषण पर्व के दिवसों में मिसाल बन गयी। श्रावक, श्राविकाओं का पूरे पर्युषण काल में मेला सा लगा रहा। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही विभिन्न धर्माराधना के आयोजन होते रहे हैं जिनमे विशेषकर प्रति रविवार 200-300 युवक, युवतियों के लिये विभिन्न विषयों पर अनेकों विद्वत्जनों के साथ-साथ श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. के विशेष उद्बोधन रहे हैं। 25 जुलाई को श्रद्धेय श्री गौतम मुनि जी म.सा. के सानिध्य में जयपुर के सभी उपनगरों के पदाधिकारियों का लघुशिविर आयोजित हुआ। जिसमें म.सा. द्वारा "संघ गरिमा एवं श्रावक कर्त्तव्य बोध" विषय पर उद्बोधन दिया गया। 26 जुलाई को म.सा. के सानिध्य में युवती मण्डल की ओर से "Learning motivation & fun" विषय

पर कार्यशाला आयोजित हुई। युवती मंडल द्वारा धोवन पानी के उपयोग हेतु 7 अगस्त को "धोवन पानी दिवस" के रूप में मनाया गया। जिसमें प्रत्यक्ष रूप से धोवन पानी बनाने की विधि बताई गई। जिसमें लगभग 180 श्राविकाओं ने नियमित रूप से धोवन पानी बनाने का संकल्प लिया। श्रावकों के लिए 67 बोल व 'कर्म प्रकृति के थोकडें' की विशेष कक्षायें लगायी जा रही है जिनमें अनेकों श्रावक, श्राविकायें लाभ ले रहे हैं। 6 से 10 अगस्त 2021 तक पंचदिवसीय कार्यक्रम रखा गया जिसमें 108 श्रावक, श्राविकाओं द्वारा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप एवं जप दिवस के रूप में धर्माराधना की गयी। 16 अगस्त से 20 अगस्त 2021 तक 5 दिवसीय आध्यात्मिक शिविर का आयोजन श्राविका मंडल, जयपुर द्वारा किया गया जिसमें अनेकों धार्मिक क्रियाओं का सम्पादन किया गया। इस शिविर में लगभग 160 श्राविकाओं ने भाग लेकर ज्ञान का संवर्धन किया। मानसरोवर श्री संघ व युवती मंडल के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय 28 व 29 अगस्त 2021 को "स्मार्ट गर्ल वर्कशॉप" का आयोजन मुनि श्री के उद्‌बोधन के साथ प्रारम्भ हुआ, जिसमें लगभग 155 युवतियों ने भाग लिया। कार्यक्रम सुबोध लॉ कॉलेज, मानसरोवर में सम्पन्न किया गया जिसमें भारतीय जैन संघटना के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी लूंकड़, ईरोड ने बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनने के मूल मंत्र दिये। इस वर्कशाप का समापन मुनिश्री के पावन सान्निध्य में श्रद्धेय श्री गौतम मुनिजी म.सा. के उद्‌बोधन के साथ हुआ। मुनिश्री ने उन्हें आत्मविश्वासी बनने पर जोर दिया तथा मित्र की परिभाषा देते हुए अच्छे मित्र बनाने की सलाह देते हुये सावधान, संस्कारवान, चरित्रवान बनने के लिए प्रेरणा दी। इस अवसर पर युवती मंडल की अध्यक्षा श्रीमती विजेता जी लोढ़ा ने भी श्री संघ का आभार व्यक्त करते हुये अपने विचारों को बालिकाओं के साथ साझा किया। अनेकों धर्मराधना के कार्यक्रमों के साथ चातुर्मास में धर्म ध्यान का ठाठ लगा हुआ है और तपस्या के क्रम में संवत्सरी पर्व तक 31 की दो तपस्या, 1 मासखमण, 11 की आठ, 9 की 22, अठाई 38, 6 उपवास की 2, 5 उपवास की 2, व 165 तेले की तपस्यायें सम्पन्न हो चुकी हैं। तपस्या करने वालों में अटूट श्रद्धा व विश्वास के साथ उल्लास के भाव चल रहे हैं। श्री संघ मानसरोवर के मंत्री श्रावक रत्न श्री धर्मचंद जी जैन (पाटोली) ने अपनी धर्मसहायिका श्रीमती शान्ति देवी के साथ आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर धर्म की प्रभावना की।

आगामी 19 सितम्बर को जयपुर के स्वाध्यायियों का सम्मेलन व 'एकासना दिवस तथा 26 सितम्बर को शिक्षक बोध सम्मेलन प्रस्तावित है।

पुष्कर रोड़ अजमेर मुनिश्री के सान्निध्य से हुआ पावन

शौर्यनगरी अजमेर व्याख्यानी सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण मुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-8 के पावन सान्निध्य से धर्मनगरी बना हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से नियमित प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण, धर्मचर्चा आदि में श्रावक-श्राविकाएँ अच्छी संख्या में भाग ले रहे हैं।

उपवास, आयंबिल, एकासन एवं रात्रिकालीन कम से कम दो संवर तथा तेले की लड़ी में सभी बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। रविवारीय सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम नियमित रूप से गतिमान है, जिसमें श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. नये-नये विषयों पर उद्बोधन प्रदान कर रहे हैं। कार्यक्रम में युवावर्ग अपनी प्रशंसनीय उपस्थिति दर्ज कर रहा है।

पर्वाधिराज पर्युषण के पहले दिन ज्ञान दिवस पर लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं ने 100 गाथाओं का स्वाध्याय किया। दूसरे दिन दर्शन दिवस पर 150 भक्तगणों ने 36-36 वन्दना की। तीसरे चारित्र दिवस पर लगभग 30 श्रावकों ने रात्रिसंवर की आराधना की। चौथे तप दिवस में पौरषी से लेकर दिवसचरिम तप की तथा 125 लोगों ने द्रव्य आहार की मर्यादा कर निर्जरा का लक्ष्य रखा। पांचवें दान दिवस एवं छठे शील दिवस पर दान एवं दया की प्रेरणा की गई। आत्मशुद्धि के सातवें दिवस पर 12 भावना एवं आठवें क्षमा के पर्व पर आलोयणा के कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं ने पूर्ण सक्रियता दिखाई। प्रतिदिन दोपहर को विभिन्न प्रतियोगिताएँ लोगों में ज्ञानवर्धन करने में निमित्त बनी। पौषध एवं संवर की साधना में प्रतिकूलता होते हुए भी कइयों ने प्रथम बार भाग लिया। श्री रोहक कोठारी (4 वर्ष) एवं श्री धीर नाहर (8 वर्ष) नन्हें बालकों ने भी संवर की साधना की। पर्युषण के दौरान लगभग 90 तेले, पांच के उपवास-4, आठ एवं नौ उपवास 25 से अधिक, 11 के उपवास-2 जनों सहित बेला, चोला एवं 6 उपवास की तपस्याएँ भी हुई। पर्युषण के आठ दिनों में निवृत्तिपरक एवं प्रवृत्तिपरक साधना में 475 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने विभिन्न नियम, व्रत प्रत्याख्यान प्रतिदिन ग्रहण किये।

प्रतिदिन सुबह प्रार्थना, कक्षा, प्रवचन में रत्नाकर पच्चीसी पर श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. तथा दशवैकालिक सूत्र पर श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. द्वारा विवेचन किया जा रहा है। दोपहर में नन्दीसूत्र पूर्ण होकर जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति की वाचनी चल रही है। श्रावकगण संत-मुनिराजों के सान्निध्य में एवं श्राविकागण महासतीवृन्द के सान्निध्य में सामायिक-साधना एवं संवर-साधना का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। अजमेर संघ बाहर से आने वाले मेहमानों की आवभगत में सेवाभावना के साथ में सक्रिय है।-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मंत्री

गोटन में तत्त्वचिन्तक मुनिश्री के सान्निध्य में धर्माराधना की लहर

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 एवं व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में गोटन में प्रथम बार चतुर्विध संघ का चातुर्मास चल रहा है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही निरन्तर प्रवचन, प्रार्थना, वाचनी, धर्मचर्चा, प्रतिक्रमण गतिमान हैं। प्रतिदिन संवर साधना में अनेकों श्रावक भाग ले रहे हैं। तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.

तथा श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. के प्रवचनों से यहाँ ज्ञान गंगा बह रही है। जैन रामायण का वाचन चल रहा है, जिसमें जैन एवं जैनेतर लोग उत्साह से भाग ले रहे हैं। तपस्वी श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. निरन्तर स्वाध्याय एवं बेले-बेले की तपस्या कर रहे हैं। गुप्त तपस्याएँ भी निरन्तर चल रही हैं, जिसमें छोटे बच्चे भी बढ़-चढ़कर अपना उत्साह दिखा रहे हैं। पर्युषण पर्व के अवसर पर गोटन के श्रावक-श्राविकाएँ एवं हरसोलाव, खवासपुरा, बोरुन्दा, लांबा, बारणी, नाडसर आदि आस-पास के लगभग 60-70 श्रावक-श्राविकाओं ने धर्माराधना की। आठ दिनों तक अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ।

अभी तक गुरु भगवन्तों के सान्निध्य में 35 अठाई तप, 50 तेले, 1 पांच के तपस्या, 3 नौ की तपस्या, 6 दस की तपस्या, 7 ग्यारह की तपस्या तथा 17 की तपस्या के साथ उपवास, आयंबिल, एकासन सहित कई छोटी-बड़ी तपस्याएँ हुई हैं। 15 वर्षीय सुश्री यशस्वी ओस्तवाल ने 31 की तपस्या कर गोटन के इतिहास में सबसे कम उम्र में मासक्षपण की तपस्या का कीर्तिमान स्थापित किया है।

भगवान महावीर विकलांग समिति-जयपुर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन के संयुक्त तत्त्वावधान में विकलांग शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें आस-पास के क्षेत्रों के दिव्यांगों एवं विकलांगों को लगभग 650 उपकरण वितरित किए गए। गोटन क्षेत्र में बैंगलोर, चेन्नई, जलगांव, कानपुर, जयपुर, जोधपुर तथा आस-पास के क्षेत्रों सहित विदेशों से भी भक्तगण आकर यहाँ धर्मध्यान कर रहे हैं तथा गुरुभगवन्तों के दर्शन-वंदन हेतु आवागमन निरन्तर गतिमान हैं।

-हंसराज चौपड़ा, अध्यक्ष

धर्माराधना–तपाराधना से सराबोर हुआ जोधपुर शहर

श्रद्धेय श्री जितेंद्र मुनि जी म.सा. के 36 उपवास की तपस्या

पूज्य आचार्यप्रवर श्रद्धेय श्री हीराचंद्र जी म. सा. की असीम कृपा से जोधपुर संघ को तीन-तीन चातुर्मास प्राप्त हुए। तीनों चातुर्मास स्थल पर चातुर्मास लगने के साथ ही धर्म ध्यान और तपस्या का ठाठ लगा हुआ है।

''यह चातुर्मास मेरा चातुर्मास'' का उद्घोष जोधपुरवासियों के लिए प्रेरणा-दायक बना हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से जो धर्म-ध्यान, ज्ञानाराधना तथा तपश्चर्याएँ प्रारम्भ हुई, वह निरन्तर गतिमान हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से ही 20 विहरमान प्रभु की आराधना का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें शताधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर आराधना की।

आचार्यप्रवर श्री हीराचंद्र जी म. सा. के शासनकाल में श्रद्धेय श्री जितेंद्रमुनि जी म.सा. ने 36 की तपस्या करके रत्नसंघ के इतिहास में दीर्घ तपस्या करने वाले संत रत्न के रूप में अपना नाम अंकित कर लिया है। उनकी तपस्या से पूरा जोधपुर तपोमय हो गया। पिछले कई महीनों से श्रद्धेय मुनिश्री प्रत्येक पखवाड़े के अंत में तेला

करते हैं, उसी तेले को आगे बढ़ाते हुए अपने दृढ़ संकल्प से 36 की तपस्या संपन्न की। तपस्या काल में अप्रमत्त रहते हुए प्रति क्षण स्वाध्याय जप साधना में अपने तपस्या के दिवस व्यतीत किए, 11 अगस्त 2021 को जब आपके 36 की तपस्या का पूर होने वाला था उससे कुछ दिन पूर्व ही स्थानक में अनुमोदना भक्ति के गीत गुंजायमान होने लगे, कभी युवक संघ द्वारा तो, कभी श्राविका मंडल द्वारा प्रतिदिन स्थानक में गुरु भक्ति और तप अनुमोदना से स्थानक में संगीत मय वातावरण हो गया। जोधपुर संघ द्वारा आप श्री के तपस्या के पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में सामूहिक तेले का आह्वान किया, जिससे पूरे संघ के अंदर एक तपस्या का जबरदस्त माहौल बना और लगभग डेढ़ सौ से ऊपर तेले की तपस्या हुई। युवारत्न श्री हरिशंकर भंसाली ने मुनि श्री की तपस्या से प्रभावित होकर एक साथ नौ उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण करके युवक संघ का गौरव बढ़ाया। इसी के साथ 27 की तपस्या, 20 की तपस्या, 15 की तपस्या, 11 की तपस्या, अठाई की तपस्या तथा उपवास, एकासन आदि के प्रत्याख्यान हुए। साथ ही चातुर्मास लगने के साथ ही प्रारंभ हुई 20 विहरमान आराधना की पूर्णाहुति का कार्यक्रम भी उसी दिन संपन्न हुआ।

शक्तिनगर से महासती ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 10 अनुमोदना के लिए पधारें और घोड़ों का चौक से भी महासती चन्द्रकला जी म.सा.की ओर से तप अनुमोदना करने विनीतप्रभाजी म. सा. आदि ठाणा पधारे।

यहाँ नियमित रूप से प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, प्रतिक्रमण आदि में श्रावक-श्राविकाएँ लाभ ले रहे हैं। जैनत्व के संस्कार जागृत करने हेतु युवाओं के लिए ''गेटवे ऑफ जैनिज्म'' विषय पर प्रभावी प्रवचन हो रहे हैं। प्रवचन सभा का संचालन श्रावकरत्न श्री अरुणजी मेहता द्वारा किया जा रहा है।

महापर्व पर्युषण पर नेहरुपार्क में सिद्धपद आराधना कार्यक्रम में 90 श्रावक-श्राविकाओं ने लाभ लिया। नवकार मंत्र का अखण्ड जाप आठों ही दिन अनवरत रूप से चला। अष्ट दिवसों में लगभग 40 तेले और 16 अठाई की तपस्या के साथ सैंकड़ों की संख्या में एकासन, उपवास, बियासना आदि हुए। संवत्सरी पर्व पर 100 से अधिक पौषध हुए। संघ अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुंदेचा एवं क्षेत्रीय संयोजक श्री प्रकाशजी चौपड़ा के नेतृत्व में सभी कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से कार्यक्रम निरन्तर गतिमान हैं।-नवरत्नमल गिड़िया-मंत्री, जोधपुर

साध्वीप्रमुखाजी सहित महासतीवृन्दों के चातुर्मास में धर्माराधना–ज्ञानाराधना–तपाराधना में सभी स्थानों पर विशेष पुरुषार्थ

महारानी फार्म–जयपुर– साध्वी प्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-13 का उत्तम स्वाध्याय भवन, महारानी फार्म पर धर्म साधना-आराधना के साथ

चातुर्मास चल रहा है। साध्वी प्रमुखा जी का स्वास्थ्य स्थिर है। चातुर्मास प्रारम्भ से तपस्या का क्रम निरन्तर चल रहा है। प्रतिदिन प्रवचन हो रहे हैं, जिसमें अच्छी संख्या में उपस्थिति रहती है। उपवास, एकासन, बियासन, आयंबिल, नींवी तथा तेले की लड़ी गतिमान हैं। कई तपस्याएँ अभी भी चल रही हैं। 11, 9 की तपस्याओं के साथ ही नींवी का मासक्षपण तथा एकासन का वर्षीतप भी चल रहा है। दर्शनार्थियों के आने का क्रम जारी है, स्वधर्मी भाई-बहिनों के स्वागत के लिए सभी कार्यकर्त्ता समर्पित भावना से कार्यरत हैं।

सूरत– विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में सूरत शहर में धर्माराधना के कार्यक्रम सफलतापूर्वक गतिमान हैं। चातुर्मास प्रारम्भ से नियमित प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण तथा ज्ञानार्जन में श्रावक-श्राविकाएँ अच्छी संख्या में भाग ले रहे हैं। यहाँ एकासन का सिद्धि-तप निरन्तर गतिमान है, जिसमें 42 श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले रहे हैं। जैन धर्म का मौलिक इतिहास खुली किताब परीक्षा का आयोजन चल रहा है, जिसमें 85 श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले रहे हैं। सूरत जैसे व्यावसायिक शहर में तेरह की तपस्या-1, ग्यारह की तपस्या-1, दस की तपस्या-1, नौ की तपस्या-5, अठाई की तपस्या-18, पांच की तपस्या-2, चार की तपस्या-2 तथा 25 तेले की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। दो आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान श्री नरेन्द्रमलजी सिंघवी-सूरत तथा श्री ओमप्रकाश जी छाजेड़-नन्दूरबार वालों ने सपत्निक ग्रहण किए हैं। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व पर प्रतिदिन महासती श्री शारदाजी म.सा., महासती श्री विजयश्रीजी म.सा., महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा. तथा विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. ने प्रवचनामृत का वर्षण किया। पर्युषण पर्व में नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। चातुर्मास में प्रतिदिन भोजन व्यवस्था में संघ परिवार में से प्रतिदिन दो-दो परिवार सेवा देते हैं, जो अनूठी मिसाल हैं। 12 सितम्बर को सामूहिक पारणे का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 500 श्रावक-श्राविकाएँ सम्मिलित हुए। संवत्सरी दिवस पर निस्वार्थ सेवा देने वाले चिकित्सकों तथा अठाई एवं उससे ऊपर की तपस्या करने वाले तपस्वियों का बहुमान किया गया।-सुनील गांधी, महामंत्री

पाटण, भीलवाड़ा– व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में मेवाड़ क्षेत्र के छोटे से ग्राम पाटण में श्रावका-श्राविकाओं का उत्साह प्रशंसनीय है। महासती मण्डल के प्रवचनामृत से सभी लोग निरन्तर लाभान्वित हो रहे हैं। दैनिक कार्यक्रम प्रार्थना, प्रवचन, धर्मचर्चा, प्रतिक्रमण आदि में सभी लोग अच्छी संख्या में भाग ले रहे हैं। उपवास, आयंबिल, एकासन, नींवी सहित कई छोटी-बड़ी तपस्याएँ हुई है तथा अभी भी चल रही है। पर्युषण महापर्व की आराधना भी तप-त्याग के साथ सम्पन्न हुई।

भोपालगढ़, जोधपुर– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा-7 के सान्निध्य में क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में चातुर्मास साधना-आराधना एवं त्याग-तपस्या के साथ चल रहा है। प्रतिदिन प्रार्थना-प्रवचन, धर्म-चर्चा, प्रतिक्रमण में

श्रावक-श्राविकाएँ निरन्तर भाग ले रहे हैं। दया, संवर, पौषध आदि में श्रावक-श्राविकाएँ अपना उत्साह प्रदर्शित कर रहे हैं। 150 उपवास के तेले सहित अनेकों एकासन, आयंबिल, नींवी आदि प्रत्याख्यान अभी तक हो चुके हैं। कई छोटी-बड़ी तपस्याएँ अभी भी चल रही हैं।-नेमीचन्द कर्णावट, मंत्री

घोड़ों का चौक, जोधपुर– जोधपुर सूर्यनगरी के भीतरी शहर में स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन घोड़ों का चौक में व्याख्यात्री महासती श्री चंद्रकला जी म. सा. आदि ठाणा का चातुर्मास धर्मध्यान एवं तप त्याग के साथ गतिमान है। चातुर्मास लगने के साथ ही 20 विहरमान आराधना के साथ-साथ कई तरह के धार्मिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। 20 विहरमान की आराधना में लगभग 30 से 35 साधकों ने भाग लिया। तपस्या की लड़ी में क्रमशः उपवास, आयम्बिल, बीयासना, एकासन एवं तेले की लड़ी निरंतर चल रही है। महासती दर्शनलता जी म. सा. ने भी 11 की तपस्या की। घोड़ों का चौक के क्षेत्रीय संयोजक श्रीमान नरेंद्रसा बुबकिया ने भी 10 की तपस्या की। श्रीमती शोभाजी सिंघवी ने 14 की, महक जी चौपड़ा और मधु जी जैन ने नौ की तपस्या की और भी अठाई के साथ-साथ संघ के आह्वान पर श्रद्धेय जितेंद्रमुनिजी म. सा. की तपस्या के पूर के उपलक्ष्य में सामूहिक तेले भी हुए। नियमित प्रार्थना, प्रवचन, वाचना आदि कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह बना हुआ है। क्षेत्रीय कार्यकर्ता आतिथ्य सत्कार का लाभ ले रहे हैं और चातुर्मास की व्यवस्था में सभी सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पर्युषण महापर्व के अवसर पर नवकार महामंत्र का अखण्ड जाप हुआ। दस की तपस्या-2, नौ की तपस्या-2, अठाई-4, सात-2, छह-2, पांच-1 के साथ ही 21 तेले एवं 5 बेले की तपस्याएँ हुई। अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने रात्रिकालीन पौषध-संवर का लाभ लिया। महासती श्री शशिकलाजी म.सा. ने भी अठाई की तपस्या की।-नरेन्द्र बुबकिया-क्षेत्रीय संयोजक

श्रीकालाहस्ती– व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में मात्र 30 जैन घरवालें छोटे कस्बे श्रीकालाहस्ती में धर्म की गंगा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। आसपास के कस्बों के श्रावक-श्राविकाएँ भी यहाँ जिनवाणी का रसपान कर रहे हैं। महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. प्रातःकाल युवाओं के लिए विशेष कक्षा ले रहे हैं। कई युवाओं ने प्रवचन सुनकर अपने जीवन को निर्मल एवं व्यसन मुक्त बनाया है। सायंकालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् भी धर्मचर्चा में 40 श्राविकाओं एवं बालिकाओं की उपस्थिति रहती है। आचार्यप्रवर के विशेष आह्वान प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने हेतु यहाँ के बालक एवं युवा विशेष पुरुषार्थ कर रहे हैं। महासतीजी के सान्निध्य में एक दिन भिक्षु दया का आयोजन हुआ, जिसमें कई श्रावक-श्राविकाओं तथा बच्चों ने भाग लिया। दिनांक 27 से 30 अगस्त तक 14 से 25 वर्ष की बालिकाओं हेतु लाईफ डिजाइनिंग शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 50 बालिकाओं ने पूरे चार दिन महासतीजी के सान्निध्य में रहकर ज्ञानाराधना की। दिनांक 29 अगस्त को ''आओ लोक की सैर करें'' एक प्रदर्शनी का आयोजन किया

गया। पर्युषण महापर्व के आठ दिवसों में आसपास के कई गांवों तथा चेन्नई के श्रावक-श्राविकाओं ने महासतीजी के पावन सान्निध्य में रहकर जिनवाणी श्रवण, ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप, दया संवर, पौषध-प्रतिक्रमण की साधना आराधना एवं तपस्या करते हुए अपने कर्मों की निर्जरा कर चातुर्मास को स्वर्णिम बनाने में अपनी सहभागिता प्रदर्शित की।-रेखचन्द बाघमार, अध्यक्ष

शक्तिनगर, जोधपुर– व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.आदि ठाणा 10 के सान्निध्य में शक्तिनगर की पावन धरा पर चातुर्मास लगने के साथ ही धर्म ध्यान और तपस्या की लहर छाई हुई है। चातुर्मास प्रवेश के साथ ही प्रवचन प्रारंभ हो गया और चातुर्मास लगने के साथ ही बीस विहरमान की आराधना का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया, जिसमें शक्तिनगर क्षेत्र में 70 से 80 साधकों ने आराधना में भाग लिया। 25 जुलाई से नियमित ''एक कदम धर्म की ओर'' कक्षा का आयोजन भी किया जा रहा है, जिसके अंतर्गत अच्छी संख्या में युवा साथी एवं श्रावक श्राविकाएं भाग ले रही हैं। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म. सा. के मुखारविंद से जीवन बदलने के कई सुंदर तरीके और जीवन में हर परिस्थिति में अपने आपको समभाव में रखना, कर्म सत्ता के परिणाम को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन निर्वाह के कार्य करना, जिससे अकारण कर्म का बंध ना हो, सुंदर तरीके से जीवन को विनय सहित, विवेक रखते हुए जीने की कला जैसे कई ज्ञानवर्धक शिक्षाओं के साथ साथ अनेकों युवा साथियों को अच्छे-अच्छे नियम लेने की प्रेरणा की जा रही है। सावन मास से अठाई की लड़ी नियमित चल रही है जिसके अंतर्गत चातुर्मास लगने के प्रथम माह में ही लगभग 31 अठाई संपूर्ण हो चुकी हैं। साथ में 11 की 15 की तपस्या भी हुई और श्राविका निरूपा जी पटवा के 31 उपवास (मासक्षमण तप) शक्तिनगर की पावन धरा पर पूरा हो चुका है। प्रतिदिन दोपहर में श्राविकाओं के लिए स्वाध्यायशाला एवं 13 से 23 वर्ष की युवतियों के लिए उत्थानशाला का कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत कई श्राविकाएं एवं युवतियां ज्ञानार्जन कर रही हैं। शक्तिनगर की पावन धरा पर तपस्या की लहर के साथ-साथ, ज्ञान जिज्ञासु बंधुओं की प्रवचन व 8 से 9 की कक्षा में उपस्थिति सराहनीय है। प्रवचन सभा का कुशल संचालन अपने काव्य रचना द्वारा युवा अध्यक्ष श्री गजेंद्र जी चौपड़ा द्वारा किया जा रहा है। पर्युषण महापर्व के अवसर पर यहाँ 65 तेले, अठाई- 14, नौ की-3 तपस्या के साथ ही कई अन्य व्रत-प्रत्याख्यान हुए। 120 श्रावक-श्राविकाओं ने अष्ट दिवसीय सिद्धपद आराधना की। कई युवा साथियों ने आठ दिन स्थानक में रहकर ही धर्मध्यान और साधना-आराधना करने का लाभ लिया। यहाँ 5 वर्ष के बच्चों ने उपवास किया तो 80 वर्ष से अधिक वय वालों ने भी अठाई और तेले की आराधना की। आठ युवा साथियों ने संवत्सरी महापर्व पर 12 प्रहरी पौषध किया, तो कइयों ने अष्ट प्रहरी पौषध तथा सैंकड़ों की संख्या में पौषध-संवर हुए। 24 घण्टों का अखण्ड जाप पूरे आठ दिनों तक चला। शक्तिनगर क्षेत्र के संयोजक श्री अशोक सा मेहता एवं उनके सभी सहयोगी कार्यकर्ता आतिथ्य सत्कार

का एवं संपूर्ण व्यवस्था का सुंदर प्रबंधन कर रहे हैं।

पर्युषण महापर्व की आराधना हेतु व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 को पावटा स्थानक भेजा। यहाँ पर 30 तेले की तपस्या, अठाई-6 तथा अनेक छोटी-तपस्याएँ भी हुई। 80 साधकों ने सिद्धपद आराधना में भाग लिया। महासतीजी की प्रेरणा से पावटा क्षेत्र में एक वर्ष के लिए आयंबिल की लड़ी चालु की गई। संवत्सरी महापर्व पर सैंकड़ों की संख्या में पौषध हुए। संघ मंत्री श्री नवरतनजी गिड़िया, श्राविका मण्डल मंत्री श्रीमती काजलजी जैन तथा क्षेत्रीय संयोजक श्री सुरेशजी गांग के नेतृत्व में कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुए।

-गजेंद्र चौपड़ा, अध्यक्ष-श्री जैन रत्न युवक परिषद्

अमरावती– व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में अमरावती में चातुर्मास ज्ञानाराधना-धर्माराधना एवं तपाराधना के साथ गतिमान हैं। महासती मण्डल की प्रभावी वाणी एवं क्रिया से जन-जन प्रभावित हुआ है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही प्रतिदिन आयंबिल, एकासना की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को बच्चों का संस्कार शिविर, सामूहिक एकासना तथा दया-संवर की आराधना होती है। प्रवचन के पश्चात् छोटे-छोटे नियम चिट्ठियाँ बनाकर श्रावक-श्राविकाएँ एक वर्ष के लिए प्रत्याख्यान ग्रहण कर रहे हैं। जैन धर्म का मौलिक इतिहास की परीक्षा भी निरन्तर चल रही है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर धर्माराधना के साथ 23 उपवास की तपस्या-1, 16 की 1, 10 की 1, नौ की-11, अठाई की तपस्या-15 के साथ ही 125 श्रावक-श्राविकाओं ने तेले तप की आराधना की। सैंकड़ों की संख्या में उपवास, एकासन आदि तपस्याएँ हुई। तीस श्रावक-श्राविकाओं ने संवत्सरी पर्व पर पौषध किया। अष्ट दिवसीय सिद्ध-पद आराधना में 48 भाई-बहिनों ने भाग लिया। आठ दिन दोपहर को धार्मिक प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। चातुर्मास सफल बनाने में श्री प्रकाशजी वैद्य, श्री अमृतजी मुथा, श्री पन्नालालजी ओस्तवाल, श्री धर्मेन्द्र जी मुणोत, श्री प्रकाशजी बोकड़िया सहित स्थानीय संघ के सभी कार्यकर्त्ता सक्रिय हैं।-सुरेशचन्द मुणोत, मंत्री

सेलम (तमिलनाडु)– व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा-5 के चातुर्मासार्थ पदार्पण से ही सेलम निवासी धर्माराधना में पूर्णरूपेण लगे हुए हैं। प्रतिदिन एक घण्टा जाप, एकासना, बियासना, आयंबिल व तेले की लड़ी निरन्तर गतिमान हैं। साप्ताहिक बोल-थोकड़े की परीक्षा में भी अच्छा उत्साह है। प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल बच्चों की कक्षा, युवकों की कक्षा तथा दोपहर में महिलाओं की कक्षाओं में सभी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। एकासन का मासक्षपण, एकान्तर उपवास, बियासन का मासक्षपण चल रहे हैं। सेलम नगरी में स्थानकवासी, मूर्तिपूजक, तेरापंथी व दिगम्बर सभी ने मिलजुलकर अच्छी संख्या में संगठित होकर तपश्चर्याएँ की हैं। अभी तक 14 मासक्षपण, 40 सत्रह से इक्कीस तक की तपस्या, 170 आठ से सोलह तक की तपस्या के साथ ही अनेक तेले, बेले, उपवास आदि हुए हैं। 176 सामूहिक आयंबिल हुए है। सतीमण्डल के सान्निध्य में बालक-बालिकाएँ, श्राविकाएँ सामायिक,

प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल तथा कई छोटे-बड़े थोकड़ों का निरन्तर अध्ययन कर रहे हैं।

देई, बूंदी– व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के पावन सान्निध्य में छोटे से ग्राम देई में भी श्रावक-श्राविकाओं का धर्माराधना के प्रति उत्साह प्रशंसनीय है। एकासन, बियासन, आयंबिल, उपवास व तेले की लड़ी चातुर्मास प्रारम्भ से निरन्तर चल रही है। तेले, चोले, पचोले, अठाई व नौ तक की अनेक तपस्याएँ हो चुकी हैं। कई तपस्याएँ अभी भी चल रही हैं। ज्ञानाराधना का क्रम अनवरत रूप से गतिमान हैं। लम्बे अन्तराल से बंद धार्मिक पाठशाला का पुनः संचालन महासती मण्डल की प्रेरणा से हुआ है, जिसमें प्रतिदिन लगभग 37 बच्चें ज्ञानार्जन हेतु आ रहे हैं। कई बच्चों ने सामायिक सूत्र कण्ठस्थ कर लिया है तथा पाँच बच्चों का प्रतिक्रमण पूर्णता की ओर है। प्रत्येक रविवार को धार्मिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। पर्युषण पर्व के दौरान आठों दिन नवकार महामंत्र का जाप हुआ। प्रतिदिन प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई, सामूहिक दया का आयोजन रखा गया। सामायिक की 6 पचरंगी हुई। संवत्सरी महापर्व पर लगभग 70 पौषध हुए। प्रतिदिन गोचरी सेवा में नवयुवक मण्डल की सेवाएँ सराहनीय है। -ताराचन्द जैन, मंत्री

विल्लुपुरम् (तमिलनाडु)– व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में विल्लुपुरम् के श्रावक-श्राविकाएँ जिनवाणी श्रवण के साथ ही साधना-आराधना में भी विशेष उत्साह प्रदर्शित कर रहे हैं। तप-त्याग का सुन्दर ठाट लगा हुआ है। एकासन, बियासन, उपवास, आयंबिल, नींवी की लड़ी निरन्तर चल रही है। पर्युषण पर्व पर लगभग 4700 सामायिक, 200 संवर, 300 पौषध, 150 एकासन, 200 बियासन, 10 नींवी, 50 आयंबिल, 300 उपवास, 20 बेला, 20 तेला, 2 पाँच, 4 आठ, 2 नौ, 4 ग्यारह, 1 तेरह, 4 चौदह एवं 1 पन्द्रह की तपस्या सहित कई तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं तथा कई तपस्याएँ अभी भी चल रही हैं। सिद्धपद आराधना एवं सिद्धितप, भद्रोत्तर तप की आराधना हुई। आठों दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ, जिसमें अनेकों श्रावक-श्राविकाओं तथा बालक-बालिकाओं ने उत्साह से भाग लिया।-रिखबचन्द बम्ब, अध्यक्ष

पाली–मारवाड़– सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में धर्मनगरी पाली में ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग, साधना-आराधना की गतिविधियाँ निरन्तर सुचारू रूप से चल रही है। जिनवाणी की वर्षा निरन्तर हो रही है। महासती मण्डल द्वारा धर्म की महती प्रभावना की जा रही है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही प्रार्थना, प्रवचन, प्रतिक्रमण, धर्मचर्चा आदि कार्यक्रमों में अच्छी उपस्थिति रहती है। महापर्व पर्युषण में विशेष धर्माराधना हुई है। श्रावक एवं श्राविकावर्ग में तेले की लड़ी नियमित गतिमान है। पर्युषण पूर्व भी तीसरे सप्ताह में सामायिक एवं संवर की पचरंगी हुई है। अभी तक 14 अठाई तप, 1 ग्यारह की तपस्या, 3 नौ की तपस्या, 1 छह की तपस्या, 1 चार की तपस्या के साथ ही उपवास, एकासन, बियासन, आयंबिल आदि अनेक तप हुए हैं। ज्ञानार्थी बहन रीटाजी ने भी 11 की तपस्या कर सोने पर सुहागा

का काम किया। पर्युषण के दौरान सायंकालीन प्रतिक्रमण नये युवारत्न बन्धुओं ने करवाया। संवत्सरी महापर्व पर उपवासयुक्त पौषध श्रावक वर्ग में 42 एवं श्राविका वर्ग में 40 हुए।-कान्तिलाल लूंकड़, अध्यक्ष

मैसूर (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-6 के पावन सान्निध्य में श्रावक-श्राविकाएँ धर्माराधना, तपाराधना में विशेष पुरुषार्थ कर रहे हैं। यहाँ प्रातःकालीन नवकार मंत्र का जाप, ''मेरा शासन महान्'' विषय पर नवयुवकों के लिए कक्षा, प्रवचन, दोपहर को ''नरक से निगोद तक'' की कक्षा, 21 थोकड़ों की परीक्षा आदि कार्यक्रम निरन्तर चल रहे हैं। पूज्य श्री सागरमलजी म.सा. के स्मृति दिवस, पक्खी, आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी म.सा. के स्मृति दिवस पर 3 दिन एकासन का आयोजन हुआ, जिसमें 150 एकासन के तेले हुए। चातुर्मास प्रारम्भ से ही तेले, उपवास, आयंबिल, नींवी, एकासन, बियासन, संवर की लड़ी निरन्तर चल रही हैं। पर्युषण महापर्व पर 30 की तपस्या-1, 28 की 1, 11 की 5, 9 की 9, अठाई-33, सात की 1, छह की 2, पांच की 7, चोले-5, तेले-215, बेले- 75, आयंबिल की अठाई-5, नींवी की अठाई-3, एकासन की अठाई- 50, बीयासन की अठाई-80 के साथ ही हजारों की संख्या में उपवास के प्रत्याख्यान हुए। 25 एकान्तर तप तथा 8 बेले तप चल रहे हैं। आठ दिन अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ। एक सतरंगी तथा एक धर्म चक्र भी सम्पन्न हुआ है। प्रतिदिन संवर एवं पौषध अच्छी संख्या में हुए। कई बड़ी तपस्याएँ अभी भी चल रही है।-सुभाषचन्द धोका, मंत्री

लाल भवन, जयपुर– चौड़ा रास्ता पर स्थित लाल भवन में व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मास धर्माराधना के साथ चल रहा है, उनके प्रवचन श्रोताओं को आकर्षित कर रहे हैं। तपस्याओं में दो-तीन मासक्षपण चल रहे हैं व प्रतिदिन उपवास, बेले, तेले की तपस्याएँ के प्रत्याख्यान हो रहे हैं। महासती श्री भविताश्रीजी म. सा. कर्मग्रन्थ पर बहुत ही मार्मिक विवेचना के साथ अपना प्रवचन फरमा रही है। सभी जगह प्रवचन में अच्छी उपस्थिति देखी जा रही है।

-सुरेशचन्द कोठारी, मंत्री, जयपुर

सूचनार्थ

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1009 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने संवत्सरी महापर्व के अवसर पर घोषणा की है- ''भविष्य में रत्नसंघ का संचालन (भावी आचार्य) महेन्द्रमुनिजी करेंगे''।

संघ की रीति-नीति, संघीय मर्यादाओं तथा एकरूपता के लिए, संघ द्वारा अग्रांकित क्रम जयघोष-उद्बोधन हेतु किया जाता है।

1. सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. की जय।
2. जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, परम

श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की जय।

3. परम श्रद्धेय, महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की जय।
4. शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. की जय।

-प्रकाश टाटिया, अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

आवश्यक सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाश जी टाटिया की दिनांक 29 सितम्बर 2021 को बाईपास सर्जरी सफलतापूर्वक हुई है। मैं संघ परिवार एवं रत्नसंघ सदस्यों की ओर से अध्यक्ष महोदय के शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामना करता हूँ।

विशेष– संघ की संचालन समिति एवं कार्यकारिणी बैठक दिनांक 13 नवम्बर तथा संघ एवं संघीय संस्थाओं की संयुक्त आमसभा 14 नवम्बर को आयोजित करने का निर्णय लिया गया था, जिसे फिलहाल स्थगित किया जा रहा है। चिकित्सकीय परामर्शानुसार अध्यक्ष महोदय के स्वास्थ्य अनुकूल होने पर बैठक की आगामी दिनांक निश्चित कर सभी को सूचित करने का प्रयास रहेगा। सधन्यवाद।

-धनपत सेठिया, महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 240 स्वाध्यायियों द्वारा 105 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत् 76 वर्षों से जैन संत-सतीयों के चातुर्मास से वंचित गांव/नगरों में विद्वान् क्रियावान, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेज कर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना-आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनांक 04 सितम्बर से 11 सितम्बर, 2021 तक मनाया गया। पर्वाराधना में उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़, मारवाड़, पोरवाल, पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े दूर एवं निकट के 105 क्षेत्रों में लगभग 240 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की। सभी स्थानों पर सामायिक, दया, संवर, उपवास, पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञानवृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया।-सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं संस्कार केन्द्र, जोधपुर की संयुक्त प्रचार–प्रसार यात्रा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की संयुक्त प्रचार-प्रसार यात्रा मारवाड़ के सिवांची क्षेत्र के पचपदरा, बालोतरा, बाड़मेर एवं आगोलाई में 25 जुलाई को तथा 31 जुलाई 2021 को पाली में सम्पन्न हुई, जिसमें शिक्षण बोर्ड की आवश्यक सूत्र खुली किताब परीक्षा एवं 09 जनवरी, 2022 को कक्षा 1 से 12 तक की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) परीक्षा में भाग लेने की पुरजोर प्रेरणा की गई तथा परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरवाये गये। साथ ही संस्कार पाठशालाओं एवं रविवारीय शिविर प्रारम्भ करने की भी प्रेरणा की गई तथा नये स्वाध्यायी बनने एवं पुराने स्वाध्यायियों को पर्युषण में सेवा देने हेतु भी प्रेरित किया गया। इस कार्यक्रम में 1. श्री सुभाषचन्दजी नाहर (सचिव-शिक्षण बोर्ड), 2. श्री राजेशजी भण्डारी (सचिव-संस्कार केन्द्र), 3. श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट (सहसचिव- संस्कार केन्द्र) तथा श्री सुरेशजी हिंगड़ (प्रचारक- शिक्षण बोर्ड) की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्राप्त हुई।

उक्त प्रचार-प्रसार में पाली के स्थानीय संघ, श्राविका मण्डल व युवक परिषद् के पदाधिकारियों के साथ-साथ सभी स्थानों पर श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति एवं उत्साह प्रमोदजन्य रहा।

-सुभाषचन्द नाहर, सचिव-शिक्षण बोर्ड एवं राजेश भण्डारी, सचिव-संस्कार केन्द्र

शिक्षणबोर्ड की थोकड़ों की परीक्षा 09 जनवरी, 2022 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों की परीक्षा) कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा रविवार, 09 जनवरी, 2022 को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

तत्त्वज्ञान के रसिक भाई-बहिनों से विनम्र अनुरोध है कि थोकड़ों की इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। आवेदन-पत्र, पुस्तकें, परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- 1. अशोक बाफना, संयोजक-094442-70145, 2. सुभाष नाहर, सचिव-094132-02678, 3. शिक्षण बोर्ड कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन: 0291-2630490, 76109-53735

-सुभाष नाहर, सचिव

पीपाड़ शहर में कवाड़ अतिथि भवन का लोकार्पण

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पीपाड़ में काफी दिनों से अतिथि भवन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। संघ के श्रावकरत्न वीरपिता श्री प्रेमकुमारजी कवाड़, पीपाड़/चेन्नई ने संघ की भावना का समादर करते हुए पीपाड़ में

पृथ्वी–सुन्दर–मधु कवाड़ अतिथि भवन का निर्माण कर संघ को समर्पित किया है। इस भवन का लोकार्पण दिनाँक 13 अगस्त, 2021 को रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया के कर कमलों से हुआ। यह भवन तीन मंजिला सभी सुविधाओं से युक्त है। अभी आचार्य भगवन्त के चातुर्मास काल में पधारने वाले दर्शनार्थी बन्धुओं की आवास-निवास एवं भोजन व्यवस्था का सुन्दर रूप इस भवन में देखने को मिल रहा है। संघ की ओर से कवाड़ परिवार को हार्दिक बधाई।

-श्रेणिक कटारिया, अध्यक्ष

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

150000/-श्रीमती रूचिताजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

100000/-सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर, संघ सहायतार्थ।

23000/-श्री प्रवीणकुमारजी, मनोजकुमारजी, रक्षिताजी, शैलेषजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुम्भकोणम-चेन्नई, संघ सहायता रत्नम् हेतु।

21000/-श्रीमती लाडकंवरजी धर्मसहायिका श्री अमरचन्दजी साण्ड, अजमेर, संघ-सहायता।

20000/-श्रीमती सुशीलाजी पितलिया, श्री विक्रमजी, सुशीलजी पितलिया, रतलाम (मध्यप्रदेश), श्रावकरत्न स्व. श्री सोहनलालजी पितलिया के देहावसान पर उनकी पावन स्मृति में।

7000/- श्री चम्पालालजी सुपुत्र श्री अमोलकचन्दजी, श्रीमती शोभादेवीजी, विनोदजी, सचिनजी कर्णावट, लासूर स्टेशन (महा.), जीवदया हेतु।

5100/- श्रीमती सुरजकंवर जी बोहरा धर्मपत्नी स्व. श्री अमरचन्दजी बोहरा एवं श्री अमितजी बोहरा, ब्यावर, जीवदया हेतु।

5100/- श्री महावीर जैन श्रावक समिति, जोधपुर, जीवदया हेतु।

5001/- श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, जीवदया हेतु।

5000/- श्रीमती विमलाजी रिखबराजजी जैन (नाबरिया), जोधपुर, जीवदया हेतु।

5000/- श्रीमती पंकजजी, सरलाजी, अलकाजी छाजेड़, जोधपुर, जीवदया हेतु।

4600/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मण्डावर, जीवदया हेतु।

4200/- सुश्री मुस्कानजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

3500/- श्री पारसमलजी सुपुत्र स्व.श्री मगराजजी ढेलड़िया बोहरा, ग्राम-मंडली, वाया-कल्याणपुर, जिला-बाड़मेर, संघ सहयोगार्थ।

2100/- श्री नरेशजी संचेती, जोधपुर, स्व. श्री सिद्धान्तजी सुराणा की पावन स्मृति में जीवदया हेतु।

2100/- श्री जिनेश्वरजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2100/- श्री गजुदेवीजी सांखला, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2100/- श्रीमती पुष्पाजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2000/- श्री किशोरमलजी छाजेड़, जोधपुर, सहयोगार्थ।

2000/- श्री महेन्द्रसिंहजी ढढ्ढा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2000/- श्री पन्नालालजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

2000/- श्रीमती पायलजी सिंघवी, मैसूर, कर्नाटक, सहयोगार्थ।

1500/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,सूरत, जीवदया हेतु।
1500/- श्रीमती किरणजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1100/- श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद, जीवदया हेतु।
1100/- श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, अनुपम के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु।
1100/- श्रीमती विजयाजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1100/- श्री नितिनजी, राहुलजी, प्रणितजी, मनितजी सिंघवी, जोधपुर, आदरणीय दादीसा श्रीमती रतनकंवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री रिखबचन्दजी सिंघवी एवं माताजी स्व. श्रीमती उषाजी धर्मसहायिका श्री नेमीचन्दजी सिंघवी के 01मई, 2021 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।
1100/- श्री रमेशजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1100/- श्री रामरतनजी भंसाली, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1100/- श्रीमती शान्तिदेवीजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1002/- श्रीमती कान्ताजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1000/- श्रीमती सुमनजी भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।
1000/- श्रीमती मंजूदेवीजी-सुनीलजी संकलेचा, जोधपुर, पूज्य पिताश्री स्व. श्री पुखराज जी मुणोत एवं पूज्य माताश्री स्व. श्रीमती पदमादेवीजी मुणोत की पावन स्मृति में जीवदया हेतु।
500/- श्रीमती प्रकाशकंवरजी मुणोत, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री दिनेशजी गांग सुपुत्र स्व. श्री मनमोहनमलजी गांग, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री प्रकाशजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्रीमती सचिजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री रितेशजी नाहर, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री मयंकजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री अमरप्रकाशजी सुराणा, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री राकेशजी गांधी, जोधपुर, जीवदया हेतु।
500/- श्री सुनीताजी गांधी, जोधपुर, जीवदया हेतु।
400/- श्री रितेशजी जैन, जोधपुर, सहयोगार्थ।

गजेन्द्रनिधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

(माह फरवरी-2021 से सितम्बर-2021 के लाभार्थी)

200000/- श्री प्रकाशचन्दजी भण्डारी, हरलूर रोड़, बैंगलोर (कर्नाटक)।
132000/- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू।
100000/- श्री सम्पतराजजी भण्डारी, चेपॉक-ट्रिपलीकेन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
100000/- श्री विजयकुमारजी, मुकेशजी, विनीतजी गोठी (मदनगंज-किशनगढ़ वाले), कांदिवली, मुम्बई (महा.)।
100000/- श्रीमती बसन्तीदेवी अम्बालालजी कर्णावट, साहुकारपेठ, चेन्नई (तमिल.)।
100000/- श्री राजेशजी, विमलजी, पवनजी बोहरा, पुरुषवाक्कम्, चेन्नई (तमिलनाडु)।
100000/- श्री दुलीचन्दजी बाघमार एवं परिवार, किलपॉक, चेन्नई (तमिलनाडु)।

100000 / - श्री गणपतराजजी बाघमार, कोयम्बटूर (तमिलनाडु)।
100000 / - श्री सुगनचन्दजी छाजेड़, चौपासनी रोड़, जोधपुर (राज.)।
15000 / - डॉ. (श्री) कुन्दन संगीताजी कोटेचा, भुसावल (महा.)
12000 / - श्री पुखराजजी, पंकजजी, मनीषजी जैन, महामंदिर, जोधपुर (राज.)
12000 / - श्री विपीन विजयराजजी बाफना, ठाणे (महा.)।
12000 / - श्री रंगरूपमलजी चोरड़िया, चेन्नई (तमिलनाडु)।
12000 / - श्री गणपतराजजी बाघमार, चिंतादरी पेठ, चेन्नई (तमिलनाडु)।
12000 / - श्री निर्मलकुमारजी झामड़, जवाहरनगर, जयपुर (राज.)।
12000 / - श्री दिपकजी भण्डारी, अहमदाबाद (गुजरात)।
12000 / - श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत (गुजरात)।
12000 / - श्री कैलाशजी गोलेच्छा, पिंपरी, पुना (महा.)।
12000 / - श्री सरदारचन्दजी मेहता, जोधपुर (राज.)।
12000 / - श्रीमती सुनीताजी जैन, एम.डी. रोड़, जयपुर (राज.)।
12000 / - श्रीमती स्मिता अनिलजी डोसी, मुम्बई (महा.)।
12000 / - श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत (गुजरात)।
11000 / - श्री मनोहरदेवीजी जैन, बलरामपुर (उत्तरप्रदेश)।
11000 / - श्री इन्दरमलजी जारोली, बालोतरा (राज.)।
11000 / - श्रीमती रेखाजी जारोली, बालोतरा (राज.)।
11000 / - श्री पियुषजी जारोली, बालोतरा (राज.)।
5000 / - श्री मनोहरजी भण्डारी, जलगांव (महा.)।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

9000 / - श्री प्रतीकजी, प्रणयजी चोरडिया, चांगोटोला, सहयोग हेतु।
7000 / - श्री देवराजजी नाहर, चांगोटोला, सहयोग हेतु।
5000 / - श्रीमती सरोज जी, श्री अजीतराज जी आशीष जी मेहता, जोधपुर। सहयोग हेतु।
4000 / - श्री टीकमचन्दजी आबड़, चांगोटोला, सहयोग हेतु।
4000 / - श्री अरविन्दजी, अभिषेकजी सिंघवी, मैसूर-कर्नाटक, सहयोगार्थ।
3500 / - श्री प्रकाशचन्दजी नाहर, चांगोटोला, सहयोग हेतु।
3100 / - श्रीमती शान्तिजी सुरेन्द्रजी मेहता, जोधपुर। सहयोग हेतु।
3000 / - श्रीमती निर्मलादेवीजी मोहनराजजी मुथा, लासुर स्टेशन, सहयोग हेतु।
2500 / - श्री ऋषभ जी जैन, जोधपुर। सहयोग हेतु।
2100 / - श्री महावीर जी जैन, जोधपुर। सहयोग हेतु।
2100 / - श्रीमती उषाजी शांतिचन्दजी बोहरा, जोधपुर। सहयोग हेतु।
2100 / - श्री नरेन्द्र जी मेहता, जोधपुर। सहयोग हेतु।
2000 / - डॉ. एस.सी. सिंघवी, संदीप जी कुलदीप जी सिंघवी, जोधपुर। सहयोग हेतु।
2000 / - डॉ. एस.सी. सिंघवी, आदित्य जी, दीवित, कविन सिंघवी, जोधपुर। सहयोग हेतु।
2000 / - श्री किशोरमल जी छाजेड़, जोधपुर। सहयोग हेतु।
1100 / - श्री हनुमानप्रसादजी, मुकेशकुमारजी, आनन्दजी जैन, इन्दौर, चि. चेतनजी

जैन का शुभ विवाह सौ. सोनल जैन के साथ सम्पन्न होने पर।

1100/- श्रीमती सायरबाईजी जवाहरलालजी रांका, भडगांव। सहयोग हेतु।

1100/- श्री ताराचंद जी जैन, देवली। अपने 78वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

500/- श्री नेमीचंद जी सिंघवी, जोधपुर। सहयोग हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण–2021 सहयोग

25000/-पल्लीपेट	25000/- कोलकाता	11000/- करही
5100/- हिण्डौन सिटी	5100/- नादेड़	5100/- प्रतापनगर,जयपुर
4100/- चांगोटोला	3100/- नारनोल	3100/- पल्लावरम
3100/- जालोर	3100/- उमरगांव	3100/- आगोलाई
2100/- अलीगढ़	2100/- देवली	2000/- मगरदा
1500/- श्योरपुर कलां	1100/- कुश्तला	1100/- सुमेरगंज मण्डी

अ. भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड को प्राप्त साभार

5100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, आगोलाई, जिला-जोधपुर (राज.)।

2000/- श्री किशोरमलजी छाजेड़, जोधपुर, सहयोगार्थ।

2000/- श्री पी. दलपतराजजी, अरविन्दजी, अभिषेकजी, कौशल्याजी, पायलजी, भारतीजी सिंघवी, मैसूर-कर्नाटक, सहयोगार्थ।

1000/- डॉ. एस. सी. सिंघवी, कुलदीपजी, संदीपजी सिंघवी, जोधपुर, सहयोगार्थ।

1000/- श्रीमती सुमनजी भण्डारी, जोधपुर, सहयोगार्थ।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

100000/- श्री प्रवीणकुमारजी, मनोजकुमारजी, रक्षिताजी, शैलेषजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुम्भकोणम-चेन्नई (तमिलनाडु)।

100000/- श्री सुरेशजी कांकरिया एवं परिवार, भोपालगढ़-जिला-जोधपुर (राज.)।

31000/- श्रीमती सुशीला रघुवंशजी मेहता जनकल्याण ट्रस्ट, जोधपुर (राज.)।

27000/- श्रीमती मंजूजी खिंवसरा धर्मसहायिका स्व. श्री दिनेशजी खिंवसरा, जोधपुर

5100/- श्री सुमेरमलजी, राजेशजी, मनोजजी कांकरिया, जोधपुर (राज.)।

5100/- श्री शेखरजी किशोरमलजी कुम्भट, निर्मलाजी, जयेशजी कुम्भट, जोधपुर

5100/- श्री मोतीलालजी नरेशचन्दजी, स्नेहलताजी संकलेचा, जोधपुर (राज.)

2000/- श्री पी. दलपतराजजी सिंघवी, मैसूर, कर्नाटक, सहयोगार्थ।

क्षमायाचना एवं निवेदन

सांवत्सरिक क्षमायाचना के अवसर पर रत्नम् समाचार पत्र के सभी पाठकों एवं संघ सदस्यों से हार्दिक क्षमायाचना।

आपको रत्नम् नियमित प्राप्त हो रहा होगा, यदि किसी संघ सदस्य को रत्नम् भिजवाना हो तो आप उनका नाम, पता एवं मोबाइल नम्बर, संघ कार्यालय को प्रेषित करावें। रत्नम् में प्रकाशित करने हेतु समाचार आप संघ कार्यालय में अथवा मेरे मोबाइल नं. पर व्हाट्स एप्प के माध्यम से भिजवा सकते हैं।

-प्रकाश सालेचा, सम्पादक, मोबाइल : 94610-26279

आचार्यद्वय को पाया है........।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं भावी आचार्य परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. की स्तुति स्वरूप भजन व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. एवं महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. ने समवेत स्वर के साथ गुरुदेव की सेवा में प्रस्तुत किया, जिसका संकलन युवारत्न श्री रितिकजी मुथा, पीपाड़शहर ने किया।-सम्पादक

(तर्ज:- प्रभु सिद्धान्त को......।)

आचार्य द्वय को पाया है, आनन्द दिल में छाया है,
नया रचा इतिहास देखो, अन्तर्मन हर्षाया है।
आचार्य द्वय को पाया है.......।। टेर।।

संवत्सरी दिन था प्यारा, गुरु हीरा का फरमान,
सह करके जीव आया, निगोद में समता धार।
जीवन का सार बताया, मुक्ति का मार्ग बताया।
सिद्धों ने भी सह करके, शाश्वत स्थान पाया।
नया रचा इतिहास.....।। 1।।

समोशरण सी झाँकी का, पाया था अहसास,
तीर्थंकर के सम थे, गुरु हीरा के अल्फाज।
सहने के लिए समझाया, फिर घोष गुरु ने गुँजाया,
भावी आचार्य महेन्द्र, संघ का है भाग्य सवाया।।
नया रचा इतिहास.....।। 2।।

आगम ग्रन्थ गाते, तीजे पद के गुणगान,
निर्लिप्त निस्पृही साधक, बन जाते संघ की शान।
साधना सुवास है, श्रुत का प्रकाश है,
उत्तराध्ययन ने भी गाया, ज्ञानी का गान है।।
नया रचा इतिहास.....।। 3।।

वात्सल्य से पूरित, इनकी हर एक श्वास,
दया भाव का इनमें, बहता है झरना अपार।
इनमें झलकती है, आगम की शिक्षा,
वाणी से झरती है, अमृत की वर्षा।
चातक बनकर आये हैं, हम सीप से मोती पाने को।।
आचार्य द्वय को.......।। 4।।

आगामी पर्व

आश्विन कृष्णा 14	मंगलवार	05.10.2021	चतुर्दशी, पक्खी पर्व
आश्विन शुक्ला 7	मंगलवार	12.10.2021	आयम्बिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला 8	बुधवार	13.10.2021	अष्टमी
आश्विन शुक्ला 10	शुक्रवार	15.10.2021	आचार्य पूज्य श्री भूधरजी म.सा. का स्मृति दिवस
आश्विन शुक्ला 14	मंगलवार	19.10.2021	चतुर्दशी
आश्विन शुक्ला 15	बुधवार	20.10.2021	पक्खी पर्व, आयम्बिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 1	गुरुवार	21.10.2021	आचार्य पूज्य श्री हमीरमलजी म.सा. का 168 वां स्मृति दिवस
कार्तिक कृष्णा 3	शनिवार	23.10.2021	स्वाति नक्षत्र प्रारम्भ (इसके पश्चात् गाज बीज होने पर सूत्र की असज्झाय रहेगी।
कार्तिक कृष्णा 8	शुक्रवार	29.10.2021	आचार्य पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म.सा. का 220 वां स्मृति दिवस।

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

संघ सम्बन्धी नवीनतम जानकारी हेतु डाउनलोड करें

रत्नसंघ

GET IT ON Google Play

Download on the App Store

एप् में अपनी प्रोफाईल अवश्य अपडेट करें

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा, मुद्रित- शान्ता प्रिंन्टिग प्रेस, जोधपुर

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : ratnasangallindia@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई